अल्लाह की बख्शिश और रहमत सारे माल दौलत से बेहतर है''।

(क़ंज़ुल ईमान,सूरह इमरान, आयत न. 157)

पैग़ामे शबे बरात

कुरआन, अहादीस व अक़वाल की रौशनी में

मुसन्निफ़

सूफ़ी अनवर रज़ा खान क़ादरी

पेशकश : GHAUS O KHWAJA O RAZA TRUST

नाम किताब : **पैग़ामें शबे बरात**

मुसन्निफ : सूफ़ी अनवर रज़ा ख़ाँ क़ादरी (राँची, झारखण्ड)

कम्पोजिंग व डिजाईनिंग : सूफ़ी अनवर रज़ा ख़ाँ क़ादरी

नज़रे सानी : टीम, गौसो ख़्वाजा व रज़ा ट्रस्ट

बएहतमाम : गौसो ख़्वाजा व रज़ा ट्रस्ट, राँची, झारखण्ड (इंडिया)

प्रिटिंग : रांची, झारखंड

तादाद : 1000

कीमत : 20-/

हमारी कोशिश व गुजा़रिश

सुन्नियत का दर्द रखने वाले सुन्नी बरैलवी भाइयों से अपील है की अपने माली हुकूक को काबिले कुबूलियत की अदायगी के लिए सही जगह खर्च करे यानी इल्मे दीन फैलाने में इस किताब को अपने इलाके में तकसीम कराये और सुन्नियों को गुमराही व गुनाहों से बचाने के लिए कोशिश करें, दूसरो की भलाई में अपना भलाई है। अल्लाह फ़रमाता है (तर्जुमा) : **"जो अल्लाह की राह में कोशिश करे तो अपने ही भले की कोशिश करता है बेशक अल्लाह बेपरवाह है सारे जहान से।"** (कुरआन, तर्जमा कंज़ूल ईमान, सूरह -अंकबूत, आयत नं. 6)

ऐ जज्बा-ए-दिल गर चाहूँ तो हर चीज मयस्सर आ जाए !
मंजिल के लिए पहल करूँ और सामने मंजिल आ जाए !!

मुख़्तलिफ किताबें मंगवाने के लिए राबता करे : 9534124663

20.02.2024

नोटः- किताब की कंपोज़िंग में हालाँकि बहुत एहतियात बरती गई है, मगर फिर भी पढ़ने वालों से गुज़ारिश है कि टाइपिंग वग़ैरा में कोई ग़लती नज़र आए तो इत्तेला देकर शुक्रिया का मौक़ा दें।

पेशे लफ्ज

हम्द व सना

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

नहमदुहू व नुसल्ली अला रसूलिहिल करीम

या अल्लाह, तमाम तारीफे तेरे लिए, तू ही तारीफ के लायक है, तेरी जात बेमिस्ल व यकता है, तू हमेशा से है, हमेशा रहेगा। तू एक है, पाक है, तू ही इबादत के लायक है। तू ही सारी चीजों को बनाने वाला है। तू ही सारे जहां का रब है। या अल्लाह तू मेरा खुदा, मैं तेरा बंदा, तूने मुझे इबादत के लिए बनाया और कुरआन मेरे हिदायत के लिए उतारा, नबीए करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को राहे हिदायत और तरीका ए सुन्नत के लिए भेजा, औलिया का सिलसिला वसीला के लिए कयामत तक जारी रखा ताकि मैं कुरआन से हिदायत पाउँ, नबीए करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सुन्नतों को अपनाउं और तेरे औलिया के वसीले से ईमान वाला बन जाउँ,

ऐ मेरे रब तेरा एहसाने अज़ीम है की आदम अलैहिस्लाम को अपने कुद्‌रत वाले हाथ से बनाया और उनकी औलाद हमे बनाया और सबसे बड़ा एहसान ये है कि जिस हबीब को तूने अपने नूर की तजल्ली से बनाया उसका उम्मती हमे बनाया यानी अशरफुल मख़्लुक बनाया और शुक्र है तेरी दुनियावी और उखरवी नेयमतों का जिसे मैं शुमार भी नहीं कर सकता। या अल्लाह तुझ से अज़ीम, रहीम, करीम, मतीन, अलीम, हलीम, हकीम व बातिन कोई नही ।

दरूद व सलाम हो उस नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर जिसे तूने अपनी नूर की तजल्ली से बनाया और सारे जहां के लिए रहमत बनाकर हम गुनहगार उम्मतियों का नबी बनाया दरूद व सलाम हो असहाब पर और नबी के आल पर जिनका सिलसिला तूने कयामत तक जारी रखा, और सलामती हो उन तमाम मोमिन मोमिनात पर जिन्होंने तुझे राज़ी किया।

अर्ज़े मुसन्निफ़

मौजूदा दौर में मुसलमान तेज़ी के साथ दीन से दूरी बना कर दुनिया के क़रीब जा रहे हैं। दुनियवी इल्म के हुसूल में दीनी इल्म को बिल्कुल तर्जीह नहीं देते और उर्दू व अरबी पढ़ने की क़ाबिलियत दिन ब दिन कम होती जा रही है। अगर इस ग़फ़लत (दुनियादारी) को दूर न किया जाए तो दीन व ईमान पर क़ाइम रहना मुमकिन नहीं है।

लोगों की इस्लाह के लिए इस ख़ादिम की तरफ़ से औलिया अल्लाह और औलमा ए हक़ की तालीमात, उनकी तहरीरें जो उर्दू ज़बान में हैं हिंदी ज़बान में शाया करके अवामुन्नास व हक़ के तलबगारों के सामने पेश करने की कोशिश है ताकि हिंदी ज़बान के ज़रीए ही उन्हें राहे हक़ की जानिब माइल किया जाए।

हिन्दी जानने वाले हज़रात में दीनी किताबें पढ़ने का शौक़ तो है लेकिन आज बातिन की इस्लाह के लिए हिन्दी में किताबें न के बराबर हैं।

अल्लाह के फ़ज़्ल से हमारी तंज़ीम ग़ौसो ख़्वाजा व रज़ा ट्रस्ट के बानी और मुत'अल्लिक़ा टीम की मेहनत से ज़ेरे नज़र किताब **''पैग़ामे शबे बरात''** जिसमें ऐसी नसीहतें जो दिल को नफ़्स की ख़्वाहिश, शैतान की अदावत, दुनिया की महब्बत, कुफ़्फ़ार की मुशाबिहत वग़ैरह से बचाकर इसे नूरे ईमान से जगमगा देने वाली हिन्दी ज़बान में आपके जेरे नज़र मौजूद हुई है।

हमनें महसूस किया कि हिन्दी जानने वालों के लिए ऐसे लिटरेचर की ज़रूरत है जिससे उनके अक़ाइद व आमाल, ज़ाहिर व बातिन की इस्लाह हो जाए। इसी के मद्दे नज़र ख़ादिम ने हिन्दी में येह छोटी सी कोशिश की है ताकि क़ारेईन फ़ाएदा हासिल कर सकें। अगर कहीं ग़लती नज़र आए तो बाख़बर करदें ताकि अगले एडीशन में ठीक कर लिया जाए।

आख़िर में अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त की बारगाह में दुआ करता हूँ कि अपने हबीब मुहम्मद मुस्तफा ﷺ के सदक़ा-व तुफ़ैल और औलिया ए किराम व औलमाए इज़ाम के वसीले से हम सब को ईमान व अक़ीदे की फ़िक्र अता फ़रमाए।

ख़ादिम

सूफ़ी अनवर रज़ा ख़ाँन क़ादरी

बानी ग़ौसो ख़्वाजा व रज़ा ट्रस्ट

व ख़ादिम ख़ानक़ाहे चिश्तिया क़ादरिया

रांची, झारखण्ड (इंडिया)

हि. 11 शाबान 1445 / ई 22 फरवरी 2024

फेहरिस्त

सब्र, खुद्दार, दिलेरी, हक़ परस्ती अब कहाँ
रख लिया अच्छा सा एक नाम और मुसलमान हो गए

अल्लाह व रसूल ﷺ का हुक्म मानों

कुरआन में कई जगह हुक्म मानने का इनआम और न मानने का अंजाम से अल्लाह बन्दों को डराया है ताकि बन्दा इससे दुनिया व आख़िरत में फायदा हासिल कर सके।

आयत नं. 1 : "जो अल्लाह और उसके रसूल का हुक्म माने तो उसे उनका साथ मिलेगा जिनपर अल्लाह ने फ़ज़्ल किया यानी अम्बिया (नबियो) और सिद्दिक (औलिया) और शहीद और नेक लोग,ये क्या ही अच्छे साथी हैं"(कंज़ुल ईमान, सुरहः निसा, आयत 69)

आयत नं. 2 : अगर तुम अल्लाह और उसके रसूल की फ़रमाँबरदारी करोगे तो तुम्हारे किसी काम तुम्हें नुक़सान न देगा बेशक अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है। (सूरह - हुजरात, आयत न. 14)

आयत नं. 3 : जो हुक्म माने अल्लाह और अल्लाह के रसूल का, अल्लाह उसे बाग़ों में ले जाएगा जिनके नीचे नहरें रवां हमेशा उनमें रहेंगे और यही है बड़ी कामयाबी. (कंज़ुल ईमान, सुरहः निसा, आयत न. 13)

आयत नं. 4 : अल्लाह चाहता है कि अपने अहकाम तुम्हारे लिये साफ़ बयान करदे और तुम्हें अगलों की रविशे बतादे और तुमपर अपनी रहमत से रूजू (ध्यान दिलाये) फ़रमाए और अल्लाह इल्म व हिकमत वाला है. (कंज़ुल ईमान, सुरहः निसा, आयत न. 26)

आयत नं. 5 : "तो ऐ मेहबूब तुम्हारे रब की क़सम वो मुसलमान न होंगे जबतक अपने आपस के झगड़े में तुम्हें हाकिम न बनाएं फिर जो कुछ तुम हुक्म फ़रमा दो अपने दिलों में उस से रूकावट न पाएं और जी (दिल) से मान लें." (सुरहः निसा, आयत न. 65)

आयत नं. 6 : जिसने रसूल का हुक्म माना बेशक उसने अल्लाह का हुक्म माना और जिसने मुंह फेरा तो हमने तुम्हें उनके बचाने को न भेजा. (कंज़ुल ईमान, सुरहः निसा, आयत न. 80)

आयत नं. 7 :"ऐ ईमान वालो हुक्म मानो अल्लाह का और हुक्म मानो रसूल का और उनका जो तुममें हुकूमत वाले हैं फिर अगर तुममें किसी बात का झगड़ा उठे तो उसे अल्लाह और रसूल के हुज़ूर रूजू (पेश) करो अगर अल्लाह व क़यामत पर ईमान रखते हो, यह बेहतर है और इसका अन्जाम सबसे अच्छा" (कंज़ुल ईमान, सुरहः निसा, आयत न. 60)

आयत नं. 8 : जो अल्लाह और उसके रसूल की नाफ़रमानी करे और उसकी कुल हदों से बढ़ जाए अल्लाह उसे आग में दाख़िल करेगा जिसमें हमेशा रहेगा और उसके लिये ख़्वारी (ज़िल्लत) का अज़ाब है। (कंज़ुल ईमान, सुरहः निसा, आयत न. 14)

दिन लह्व में खोना तुझे, शब सुब्ह तक सोना तुझे,
शर्मे नबी–ख़ौफ़े ख़ुदा, येह भी नहीं वोह भी नहीं।

नफ्ल नमाज़ कबूल न होगी

तमाम फराएज़ और सुनत की अदाएगी के बाद नफ़्ल नमाज़े अदा करने की तरफ तवज्जोह करे, फ़राएज़ व सुनन को अदा किए बग़ैर नफिल नमाज़ न पढ़े । फर्ज कजा करने वालो का नफ़्ल कबूल न होगी । (गुनियतुत्तालिबीन, पेज 629)

नफ्ल नमाज़े किनके लिए

अल्लाह वाले फ़रमाते है : जब भी कोई शबे मेराज, शबे कद्र व शबे बरात हो जहाँ भी नवाफिलों का जिक्र है ये नवाफिल उस आदमी के लिए है जिसकी जिन्दगी में कोई नमाज़ कज़ा न हो या कोई कज़ा भी हुई हो तो वो उसे पढ़ लिया हो उसके लिए नफ़्ल नमाज़े पढ़ने का हुक़्म है। (सैयद शाह तुराबुल हक़ साहब)

इल्म सीखना नफ्ल नमाज से बेहतर है

ईमाम शाफई ने फ़रमाया : दीन का इल्म सीखना नफ़्ल नमाज़ पढ़ने से बेहतर है (इहयाउल उलूम, बाब 2)

शबे बरात बख्शिश की रात है

अल्लाह की तरफ से आवाज (तर्जमा) : ख़बरदार, है कोई मग्फिरत मांगने (यानी गुनाहों से तौबा करने वाला कि मैं उसके गुनाहों को बख्श दूं। खबरदार है कोई रिज़्क़ मांगने वाला कि मैं उसको रिज़्क़ दूं। खबरदार है कोई किसी मुसीबत में गिरफ़्तार कि मैं उसको माफ़ी अता करूं। खबरदार है कोई ऐसा ऐसा यहां तक कि फ़ज़्र तुलूअ हो जाती है। (तीन नूरानी रातें, पेज 22)

अल्लाह की बख्शिश तुम्हारे धन दौलत से बेहतर है

अल्लाह फ़रमाता है : (तर्जमा) "बेशक अगर तुम अल्लाह की राह में मारे जाओ या मर जाओ (यानी शहादत) तो अल्लाह की बख्शिश और रहमत उनके सारे धंन दौलत से बेहतर है"। (सूरह इमरान, आयत न. 157)

शबे बरात अल्लाह की रहमत की तजल्ली की रात है

सैयदना हज़रत अबू मूसा अशअरी रज़ियल्लाहु अन्हु से मरवी है कि हुज़ूर ने फ़रमाया (तर्जमा) बेशक अल्लाह त'आला शाबान की पंद्रहवीं रात में रहमत की तजल्ली फ़रमाता है पस तमाम मखलूक की सिवाए मुश्रिक (अल्लाह को ना मानने वालों) और कीना रखने वालों के बख्शिश फरमाता है। (मिश्कात शरीफ, बा हवाला, तीन नूरानी रातें, पेज 22)

बाज़ रिवायतों में है कि मुश्रिक जादूगर, काहिन, ज़िना पर इसरार करने वाला।

हमेशा शराब पीने वाला। उनकी बख्शिश नहीं होती। इससे मालूम हुआ कि जो मुसलमान किसी दूसरे मुसलमान से गैर शरई तौर पर कीना और अदावत रखता है उसकी मगफ़िरत नहीं होती। इसलिये पहले जमाने के लोग शबे बरात से पहले ही एक दूसरे से माफी मांगते और उनको राज़ी करते थे ताकि इस रात की रहमत व मग्फिरत से बहरावर हो सकें।

अल्लाह की रहमत तुम्हारे धन दौलत से बेहतर है

कुरआन में अल्लाह फ़रमाता है : तर्जुमा (ऐ नबी) तुम फ़रमाओ अल्लाह ही के फ़ज़्ल और उसी की रहमत और उसी पर चाहिये कि खुशी करें वह उनके सब धन दौलत से बेहतर है। (सूरह युनूस, आयत, 58)

अल्लाह का फ़रमान तुम्हारे धन दौलत से बेहतर है

हज़रत मौला अली रदीअल्लाहु अन्ह फ़रमाते हैं कि इल्मे दीन माल पर सात वजह से अफ़ज़ल है : (1) इल्म पैगम्बरों की मीराष और माल फ़िरऔन, हामान, और नमरूद की (2) माल खर्च करने से घटता है मगर इल्म बढ़ता है (3) माल की इन्सान हिफाज़त करता है मगर इल्म इन्सान की हिफाज़त करता है (4) मरने के बाद माल तो दुन्या में रह जाता है और इल्म क़ब्र में साथ जाता है (5) माल मोमिन व काफ़िर सब को मिल जाता है मगर इल्मे दीन का नफ्अ ईमान दार ही को हासिल होता है (6) कोई भी आलिम से बे परवाह नहीं लेकिन बहुत से लोगों को मालदारों की ज़रूरत नहीं (7) इल्म से पुल सिरात पर गुज़रने की कुव्वत हासिल होगी और माल से कमज़ोरी ।(तफ़्सीरे कबीर)

नसीहत : ऐ धन दौलत की मोहब्बत व लालच में अपना कीमती वक़्त, सेहत, ईमान, इल्म और अमल को बर्बाद करने वाले मुसलमान अल्लाह का ये फ़रमान तुम्हारा दिल बदलने के लिए काफी है। अगर इतना बात तुम्हें समझ में न आये तो तू जानवर की तरह है जिहाजा अपने आप को इंसान व मुसलमान न समझ क्योंकि अल्लाह त'आला कुरआन में दुसरी जगह फ़रमाता है (तर्जुमा) : **बेशक हमने जहन्नम के लिये पैदा किये बहुत जिन्न और आदमी वो दिल रखते हैं जिन में समझ नही और वो आँखें जिन से देखते नही और वो कान जिन से सुनते नही वो चौपायों की तरह है बल्कि उनसे बढ़कर गुमराह वही गफ़लत में पड़े हैं** (कंजुल ईमान सुरहः, अराफ, आयत न. 179) ये ये अल्लाह का फ़रमान है जिसने तुम्हें बनाया वो बेहतर जानने वाला है।

माल से ईमान को नुकसान

फरमाने नबवी है कि दो खतरनाक भेड़िए बकरियों के गल्ले (झुन्ड) में घुस कर इतना नुकसान नहीं करते जितना किसी मुसलमान के ईमान में माल, इज्जत और शोहरत की तमन्ना नुकसान करती है। (मुकाशफतुल कुलूब, बाब 38, पेज 248)

माल व ईज्जत भारी बूत है

ख़्वाजा उस्मान हारूनी फ़रमाते हैं माल (पैसा) व मर्तबा (दुनियवी शोहरत) बड़ी भारी बुत है और उन्होंने बहुत लोगों को सीधे रास्ते से गुमराह किया और कर रहे हैं। येह मअबूदे ख़लाइक़ (मख़्लूको का खुदा) बन रहे हैं। बहुत लोग इज़्ज़त व माल की परस्तिश (इबादत) करते हैं। (यानी ज़िन्दगी का असल मक़सद पैसा कमाना समझ लिए है और तमाम खून-पसीना, इल्म व अमल, ज़ाहिर व बातिन को माल कमाने में लगा देना है)

पहले दिल बनाओ

मस्जिद तो बना दी शब भर में ईमाँ की हरारत वालों ने
दिल अपना पुराना पापी है बरसों में नमाज़ी बन न सका

मस्ज़िद, मदरसा, मक़तब, ख़ानक़ाह, क़ब्रिस्तान, ईदगाह, दर्सगाह बनाने से पहले अपने दिल को बनाओ यानी मोमिन बनों फिर तुम्हारे लिए फायदेमंद होगा मस्ज़िद व ईदगाह में नमाज़ पढ़ना, मदरसा व मक़तद से इल्म हासिल करना, खानकाहों व दरगाहों से निस्बत रखना, क़ब्रिस्तान में दफ़न होना। बग़ैर ईमान यानी अच्छे दिल के कहीं भी, कभी भी , किसी भी हाल में तुम्हारा भला नहीं हो सकता।

दिल का बिगड़ना दुनियादारी के वहज से

कितनी ग़ालिब है दिल में दुनिया की मुहब्बत अनवर
नेकी भी जल्दी जल्दी करते है गुनाह करने के लिए

हदीस 6 : हज़रते हसन रज़ियल्लाहु अन्हु से मरवी है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सहाबए किराम में तशरीफ़ लाये और फ़रमाया कौन है जो अल्लाह तआला से अंधेपन (जिहालत) का नहीं बल्कि बसारत (इल्मो हिदायत) का सवाल (मांग) करता है? होशियार हो जाओ, जो दुनिया की तरफ माइल हो गया और उस से बे-इन्तेहा उम्मीदें रखने लगा उसका दिल अन्धा हो गया और जिसने दुनिया से अलाहिदगी करली और उस से कोई ख़ास उम्मीदें न रखीं, अल्लाह तआला उसे नूरे बसीरत अता फरमा दिया, वह तालीम के बगैर इल्म और तलाश के बग़ैर हिदायतयाब (हिदायत हासिल कर लिया) हो गया। (मुकाशफ़ुतुल कुलूब, बाब न. 31, पेज 192)

दिल की अहमियत

हदीस : रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फरमाया इन्सान के अन्दर गोश्त का एक लोथड़ा है, अगर वह दुरुस्त हो तो सारा जिस्म दुरुस्त होता है और अगर वोह खराब हो तो सारा जिस्म खराब होता है, सुन लो कि वोह दिल है । (बुखारी शरीफ़, जिल्द 1)

औलिया अल्लाह दिल को बनाते है

मुफ़्ती अहमद यार ख़ाँ नईमी अलैहिर्रहमा लिखते है "जंग आलूद लोहे को भट्टी की जरूरत है, और जंग आलूद दिलों के लिये सोहबते औलिया व इबादात व रियाज़त दरकार, मगर तासीर (असर) में सोहबत औलिया तेज़ तर (फ़ास्ट) है तिलावते कुरआन पाक स्याही कलब को आहिस्ता आहिस्ता दूर करती है। मगर अल्लाह वालों की नजरे करम आन की आन (फौरन) में काया पलट देती है। (शाने हबीबुर्रहमान, पेज 232, हिंदी)

अल्लाह से क्या मांगना चाहिए

अल्लाह फ़रमाता है : (तर्जुमा) तलब करो जो अल्लाह ने तुम्हारे नसीब में लिखा हो। (सूरह बक़रह, आयत न. 187)

इस रात सब कुछ लिखी जाती है

इस मुबारक रात में हर शख्स का रिज़्क लिख दिया जाता है कि इस साल इस कदर इसको मिलेगा और इतना इस्तेमाल करेगा।

इसी तरह अजल भी लिख दी जाती है कि फुलां शख़्स इतनी मुद्दत तक जिन्दा रहेगा और फुलां वक़्त मरेगा। इसी तरह जो काम आइंदा साल होने वाला होता है सब कुछ लिख दिया जाता है गर्ज़ कि इस रात में नई फेहरिस्तें तैयार होती हैं और बारगाहे इलाही में पेश की जाती हैं। (तीन नूरानी रातें, पेज 21)

परेशानी का वजह तुम्हारा तक़दीर नही है तुम हो

तुम्हारे चाहत के मुताबिक तक़दीर लिखी गयी है।

नसीब में क्या है

गौ़से पाक फ़रमाते है इंसान रूह और ज़िस्म दोनो है इंसानी रूह ज़िस्म से 2 हजार साल पहले बना। इंसानी रूहों ने जिस चीज को पाना चाहा वही उसके नसीब में अल्लाह लिख दिया है फिर इंसानी ज़िस्म इस दुनिया में उसे पाने के लिए अपना तमाम वक़्त, सेहत, कुव्वत, खून पसीना लगा दिया, यानी इंसानों को चाहने और चुनने का इख़्तियार है तक़दीर इंसान की चाहत के मुताबिक लिखी गई है। अगर कोई दुनिया चाहा तो अपने चाहत के वजह से वो दुनियादार बना और अगर कोई आख़िरत चाहा तो अपने चाहत के वजह से दीनदार बना।

अपनी चाहत बदलो यही असल तौबा है

ऐ नादान तुम्हारी चाहत ही तुम्हे अच्छा या बुरा बनाता है। हक़ व बातिल दो रास्तें है और तुम्हारा ज़िस्म सवारी (गाड़ी) है और तुम्हारा आमाल सवार (पैसेंजर) है और तुम्हारा चाहत हेंडल (स्टेरिंग) है तू जिधर जाना चाहता है उधर तुम्हारा जिस्मानी अंग व अमल चला जाता है यानी अच्छे या बुरा काम। अगर तू बुरी चाहत रखता है तो पहले बुरा बनता है फिर बुराई करता है फिर बुरे अंजाम का हक़दार बनता है।अगर अच्छी चाहत रखे तो अच्छा बनेगा, और अच्छा काम करेगा फिर अच्छा ईनआम (ज़न्नत) का हक़दार बनेगा।

दोनों थे इख़्तियार में दुनिया भी दीन भी
देखो तो तलबगारों ने किया इख़्तियार किया

इंसानों को चाहने/चुनने का इख़्तियार है

अल्लाह फरमाता है (तर्जुमा) : जो आख़िरत की खेती (नेयमत) चाहे हम उसके लिये उसकी खेती (नेयमत) बढ़ाएं और जो दुनिया की खेती चाहे हम उसे उसमें (दुनिया) से कुछ (फानी सामान) देंगे और आख़िरत में उसका कुछ हिस्सा नही । (सूरह - शूरा, आयत नं. 20)

चाहत और चुनाव

कुरआन में है : कुछ ज़बरदस्ती नहीं दीन में बेशक खूब जुदा हो गई है नेक राह गुमराही से तो जो शैतान को न माने और अल्लाह को माने उसने बड़ी मज़बूत गिरह थामी जिसे कभी खुलना नहीं। (सूरह बक़रह, आयत न. 256)

अल्लाह फ़रमाता है : (तर्जुमा) बेशक हमने उसे राह बताई की हक़ मानता या नाशुक्री करता।(सुरह इंसान, आयत नं. 3)

हक़ की चाहत रखने वालों को हिदायत

अल्लाह फ़रमाता है : (तर्जुमा) अल्लाह ने तुम्हें इस्लाम की हिदायत की अगर तुम सच्चे हो (यानी अगर तुम इस्लाम की चाहत रखते हो)। (सूरह हुज़रात, आयत 17)

चाहत ही मंजिल तक पहुँचाता है

अल्लाह फ़रमाता है : (तर्जुमा) जो आख़िरत चाहे और उसकी सी कोशिश करे और हो ईमान वाला तो उन्हीं की कोशिश ठिकाने लगी। (सूरह बनी इसराएल, आयत न. 19)

मुहब्बत ही चाहत है

जिससे मुहब्बत हो जाये उसी को पाने की चाहत इंसान के दिल में होती है और उसे पाने के लिए अपना कींमती वक़्त, इताअत, कुव्वत, दौलत, सेतह, जिस्म व जान लगा देता है जैसे बातिल (नफ्स, शैतान, दुनिया) से मोहब्बत यानीं बालित को पाने की चाहत और हक़ (अल्लाह) से मोहब्बत यानी हक को पाने की चाहत है लेकिन दिल में कोई एक ही समा सकता है। एक हदीस में **हज़रते अबू मूसा रदीअल्लाहु अन्हु कहते हैं कि पैग़म्बरे खुदा सल लल्लाहो अलैहे व सल्लम का इर्शाद पाक है कि- “जिस शख्स ने अपनी (इस) दुनियाँ से मुहब्बत किया तो उसने अपनी आखिरत को खसारे में डाला और जिसने अपनी आख़िरत से मुहब्बत किया उसने अपनी दुनियाँ को नुक़सान पहुँचाया।”** (अहमद, बैहिक़ी)

अल्लाह क्या चाहता है

अल्लाह फ़रमाता है (तर्जमा) : अल्लाह तुम पर आसानी चाहता है और तुम पर दुश्वारी नहीं चाहता है (सूरह बक़रह, आयात न. 185)

अल्लाह की रज़ा चाहो, नफ़्सानी मजा न चाहो

अल्लाह फ़रमाता है (तर्जमा) : जो अल्लाह की रजा चाहते हैं उन्हीं का काम बना। (सूरह रूम, आयत न 38)

अल्लाह की रज़ा सबसे बड़ी है

कुरआन में है " तर्जमा : (कंजूल ईमान) " अल्लाह की रज़ा सबसे बड़ी है, यही है बड़ी मुराद हासिल करना"। (सुरह तौबा, आयत न. 72)

जान लो कोई भी नियत करने, कोई भी काम करने, कोई भी बात बोलने से पहले अल्लाह की रज़ा की चाहत होना चाहिए, मन मर्जी यानी नफ़्सानी मजा व स्वार्थी के लिए नहीं , शैतान यानी गुनाह के लिए नहीं, और दौलत की लालच व नामो नमूद के लिए नहीं। अल्लाह की रज़ा सबसे बड़ी है तो बड़ी चींज की चाहत रखो फानी मालो दौलत की चाहत न रखो । माल व दौलत का सिर्फ ज़िस्मानी जरूरत जायज़ है और इसकी दिली मोहब्बत नाजायज़ है।

बन्दो के चाहत के मुताबिक अल्लाह की अता

हदीस : रसूल ﷺ ने इरशाद फ़रमाया कि आखिरत हासिल करने की चाहत पर (अमल करने वाले को) अल्लाह त'आला दुनिया भी बिन मांगे देता है लेकिन दुनिया (फानी चीजें जैसे माल व दौलत) हासिल करने की नियत पर अमल करने वाले को आखिरत नहीं मिलेगी। (गुनियतुत्तालिबीन, बाब 17, पेज 505)

क़ाबिलियत के मुताबिक अल्लाह की अता

अल्लाह फ़रमाता है : (तर्जुमा) तुम्हारा रब खूब जानता है जो तुम्हारे दिलों में है अगर तुम लायक़ हुए तो बेशक वह तौबह करने वाले को बख़्शने वाला है। (सूरह बनी इसराएल, आयत न. 25)

बड़ी ने'अमते अवामुन्नास को नहीं मिलती

हदीस : हमारे आक़ा रसूल ﷺ ने इरशाद फरमाया ऐ उमर हिदायते रहनुमाई तालिब (चाहने वालों) की इस्तेदाद (क़ाबिलियत) और जिंस (दर्जा) के मुताबिक हुआ करती है। असरारे इलाही (अल्लाह की राज़) की ने'अमते उज़मा (बड़ी ने'अमत) ना अहल (ना क़ाबिल) अवामुन्नास को नहीं दी जाती क्यूंकि उनको ऐसी ने'अमत दे देना इस ने'अमत कि ना क़द्री है। (असरारे हक़ीक़ी, हज्ज की हक़ीक़त, पेज 17)

तुम दौलत चाहते हो

ऐ दुनियादार मुसलमान आज तू धन व दौलत की चाहत रखता है इसलिए अल्लाह पर भरोसा नहीं करता, अल्लाह को याद नहीं करता, अल्लाह का भेजा हुआ कुरआन नहीं पढ़ता, अल्लाह का भेजा हुआ नबी से मुहब्बत नहीं करता न ही उनका सुन्नत अदा करता है बल्कि अल्लाह व रसूल के हुक्म़ की नाफ़रमानी करता है। यही तुम्हारी सबसे बड़ा गलती व जुर्म है।इसी का बदला है कि ज़ालिम बादशाह मूल्क में अल्लाह ने मुसल्लत कर दिया है। अपना जुर्म क़बूल कर और तौबा करके अल्लाह त'आला को राजी कर ले वरना आज दुनिया में परेशान है और कल अख़िरत में क़ब्र की अजाब व जहन्नम की अज़ाब से परेशान रहेगा और इस परेशानी की वजह तू खुद होगा।

माल और इज्जत की मुहब्बत निफाक़ है

तहकीक इंसान सरकशी करता है इस लिए कि वह खुद को गनी और बेपरवाह समझता है। मजीद फरमाया तुम्हें कसरते माल की तलब ने हलाक कर दिया फरमाने नबवी है कि जैसे पानी सब्जियां उगाता है उसी तरह माल और इज्जत की मुहब्बत इंसान के दिल में निफाक (मुनाफ़िक़त) पैदा करते हैं। (मुकाशफतुल कुलूब, बाब 38, पेज 248)

मुसीबत खुद की चाहत के वजह से

अल्लाह फ़रमाता है (तर्जुमा) : जो मुसीबत पहुंची वह इसके सबब से है जो तुम्हारे हाथों ने कमाया (यानी खुद से गुनाह किया) । (सूरह शूरा, आयत न. 30)

खुद का गुनाह खुद के लिए खतरा

अल्लाह फ़रमाता है (तर्जुमा) : ऐ लोगो तुम्हारी ज़ियादती तुम्हारे ही जानों का वबाल हैं दुनिया के जीते जी बरत लो फिर तुम्हें हमारी तरफ़ फिरना है उस वक़्त हम तुम्हें जता देंगे जो तुम्हारे कौतुक थे (सूरह यूनुस, आयत न. 23)

खुद का भला व बुरा खुद के वजह से

अगर तुम भलाई करोगे अपना भला करोगे और बुरा करोगे तो अपना (सूरह बनी इसराएल, आयत न. 7

अपनी भलाई और बुराई अपने ऊपर है

अल्लाह फ़रमाता है (तर्जुमा) : जो राह पर आया वह अपने ही भले को राह पर आया और जो बहका तो अपने ही बुरे को बहका और कोई बोझ उठाने वाली जान दूसरे का बोझ न उठाएगी और हम अज़ाब करने वाले नहीं जब तक रसूल न भेज लें। (सूरह बनी इसराएल, आयत न. 15)

एक ज़ालिम को दूसरे ज़ालिम से सजा

अल्लाह फ़रमाता है : **हम ज़ालिमों में एक को दूसरे पर मुसल्लत करते हैं बदला उनके किये (यानी गुनाह का)।** (सूरह - अनआम, आयत न. 129)

ज़ालिम क़ौम पर ज़ालिम बादशाह

हदीस : हज़रत यहया बिन हाशिम और ह़जरत यूसुफ बिन इस्हाक से रिवायत है कि नबी सलल्लाहो अलैहे वसल्लम का इरसद पाक है कि "**जैसे तुम होगे वैसे ही तुम्हारे सरदार (बादशह) मोकर्रर किये जायेंगे**।" (वैहेकी)

जैसी करनी वैसी भरनी

सरकारे दो आलम का फरमाने आलीशान है कि "नेकी पुरानी नही होती और गुनाह भुलाया नही जाता, जजा देने वाला यानी अल्लाह कभी फ़ना नही होगा, लिहाजा जो चाहे कर, तू जैसा करेगा वैसा भरेगा।"(बहरूद्दमुअ, पेज 38)

रस्म (Formality) अदा न करो, हुकूक़ अदा करो

ऐ दौलत की लालच में जीने वालों, ज़िहालत की अंधेरियों में खोने वालों, गफ़लत की नींद में सोने वालों और दुनिया की मुहब्बत में मरने वालों हर साल की तरह इस साल (शबे बरात की रात) को रस्मों में न गुजारों, सिर्फ नफ़्ली नमाज़ों को पढ़ने की चाहत न रखो बल्कि अल्लाह को राज़ी करने की चाहत रखो क्योंकि तुम्हारी दुनियादारी चाहत की वजह से अल्लाह नाराज़ हो चुका है इस नाराजगी के सबब तुम्हारा कोई नमाज़ कबूल नहीं की जाऐगी।

जान लो तुम्हारें जिम्मे 2 तरह का हुकूक है-1 हुकूकुल्लाह (यानी तुम्हारे जिम्में में जिस्मानी, माली, रूहानी हुकूक अदा करना बाकी है इसे अदा न करना ही गुनाह है) और **2 हुकूकुल इबाद** (यानी अंबिया रूसूल, औलिया, पीर, मोमिन वालदैन, औलाद, मियां-बीवी, मोमिनीन, पड़ोसी वगैरह के हुकूक अदा करना तुम्हारे जिम्मे है जैसा कि कुरआन व हदीस में हुक्म हुआ है बिना इल्म हासिल किए ये हुकूक अदा करना मुमकिन नहीं । इसे छोड़ना ही गुनाह है और ये गुनाह का माफी अल्लाह से नहीं बल्कि बन्दो से मांगने का हुक्म है यानी जिसका माल व सामान ख़्यानत (हड़प) किया हो, किसी जिस्मानी तक़लीप दिया, बात या बुरे काम से दिल दुखाया हो)

तौबा न करने वाल ज़ालिम है

अल्लाह का फ़रमान (तर्जुमा) : **जो तौबा न करें (यानी जो गुनाह करते रहे) तो वही ज़ालिम हैं।** (सूरह हुजरात, आयत न. 11)

आपने जान पर ज़ुल्म़ करते हो

अल्लाह का फ़रमान (तर्जुमा) : **बेशक अल्लाह लोगों पर कुछ ज़ुल्म नहीं करता हाँ लोग ही अपनी जानों पर ज़ुल्म करते हैं।** (सूरह यूनुस, आयत 44)

अपने आप पर ज़ुल्म करने का क्या मतलब

जान लो हुकूकुल्लाह अदा न करना अपने जान पर ज़ुल्म करना है और हुकूकुल इबाद अदा न करना दुसरो पर ज़ुल्म करना है तुम दोनो ज़ुल्म के मुज़रिम हो। अपना जायजा लो।

मुसलमान ज़ालिम कब बनता है

हजरत सैयदना उमर फारूक रदीअल्लाहु अल्लाह अन्हु ने बयान किया है के तीन बातें मुसलमान को जालिम बना देती हैं, वो ये हैंः

1. जिस काम को वह खुद करता है और दूसरों के लिए ऐब (बुरा) जानता है
2. जिस काम को दूसरों के लिए ऐब (बुरा) तसव्वुर करता है मगर उसे अपने लिए ऐब नहीं जानता है।
3. जो फुजूल बात चीत करता है और अपने दोस्तों को जिस्मानी तकलीफ़ देता और दिल दुखाता।(तंबीहूल गाफिलीन, जिल्द 2, पेज 80)

ऐ पढ़ने वालों ये बातें अगर तुम्हारे अंदर है तो अल्लाह से माफी न मांगो। क्योंकि ये गुनाह का तआल्लुक हुकूकूल इबाद से है जिसे अल्लाह माफ नही करता बल्कि जिसके साथ मामला हुआ है उसी से माफी मांगना और उसी से ये गुनाह माफ कराना चाहिए ।

हदीस में है : हुज़ूर सैयदे आलम नूरे मुजस्सम ने फरमाया :"कयामत के दिन एक मुनादी (आवाज देने वाला) अर्श के नीचे आवाज देगा ए उम्मते मोहम्मदिया मैं ने अपने हुकूक जो तुम्हारे जिम्मे था उसे तुम्हें माफ कर दिया हैं अगर तुम्हारी आपस (बंदों के दर्मियान) में गुनाह व ज्यादतियां बाकी है तो आपस में माफ करा के मेरी रहमत और फज्ल व करम से जन्नत में दाखिल हो जाओ। (तंबीहूल गाफिलीन, जिल्द 2, पेज 80)

तुम मुनाफिक तो नहीं

इस उम्मत में निफ़ाक़ का ग़लबा है फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ ने फ़रमाया (तर्जुमा) मेरी उम्मत के अक्सर मुनाफिक कारी हैं (मुकाशफतुल कुलूब, बाब 77)

मोमिन व मुनाफिक़ में फर्क़

हज़रत उमर رضي الله عنه ने सवाल किया के या रसूलल्लाह मोमिन और मुसलमान में क्या फ़र्क़ है? हुज़ूर सरकारे दो आलम ﷺ ने जवाब दिया के मोमिन आरिफे इलाही (अल्लाह को पहचान लेने वाला) होता है और उसमें ये ख़ासियत होती है के ज़्यादातर

ख़ामोश और ग़मगिनी की हालत (अल्लाह की याद, ख़ौफ़ और रज़ा) में रहता है और आम मुसलमान बातिनी तौर से सूखा (खोखला) होता है।

इसके बाद सरकारे दो आलम ﷺ ने फ़रमाया - मोमिन वो नहीं है जो मस्जिदों मे जमा होते है और सिर्फ़ ज़ुबान से "ला इलाह इल्लल्लाह" कहते है। ऐ उमर (रदीअल्लाहु अन्हु) - ऐसे कलमा पढ़ने वाले जो कि कलमे की हक़ीक़त को ही नहीं जानते और कलमे के असली मायने से ही बेख़बर हैं वो मोमिन नहीं है। बल्कि मुनाफिक़ है।(असरारे हक़ीक़ी, मक़्तूबात ख़्वाजा गरीब नवाज)

निफ़ाक़ क्या है?

अक़वाल (जब़ान), अफ़आल (अमल) और नियत (दिल) का एक जैसा न होना निफ़ाक़ कहलाता है और ऐसा मामला रखने वाले लोगों को मुनाफ़िक़ कहते है।

मुनाफिक की दो किस्में हैं

1. मुनाफिक़ ए ऐतिक़ादी (वहाबियों का निफाक) और मुनाफिक़ ए अमली (सुन्नियों का निफाक़)

1. **मुनाफिक़ ए ऐतिक़ादी :** वह है कि ज़बान से तो इस्लाम का इज़हार करता हो मगर अपने दिल में कुफ़्र छुपाए हुए हो जैसे कि हुज़ूरे अकरम ﷺ के ज़माने मे अब्दुल्लाह बिन उबइ वग़ैरह मुनाफ़िक़ों की एक जमाअत थी कि येह लोग बज़ाहिर कलिमा पढ़ते थे रोज़ा, नमाज़, हज्ज, और ज़कात के भी पाबन्द थे। मगर दिल से इस्लाम के मुन्किर थे। इस दौर में शिया, वहाबी, कादयानी, देवबन्दी, अहले हदीस वगैरह है जो हुज़ूर ﷺ व असहाबा को तौहीन (जो कुफ्र है) करके काफिर हुए। येह वह लोग थे जिनके अक़ीदे में ही निफाक़ था। मुनाफिक़ ए ऐतिक़ादी काफ़िर है बल्कि काफ़िर से भी बदतर है यानी मुरतद। कुरआन ए करीम का फ़रमान है कि "इन्नल मुनाफिकीन फिद्दर्किल असफल मिनन नार" यानी मुनाफिक़ ए ऐतिक़ादी को जहन्नम के सब से निचले तबके में डाल दिया जाऐगा।

मुनाफिक़ ए अमली (सुन्नियों का निफाक़): जिसके ईमान व अक़ीदे में कोई ख़राबी नहीं होती बल्कि वह ज़ाहिर व बातिन में मुसलमान होता है। लेकिन उसके बाज़ आ'माल और खसलतें बातिलों व मुनाफिकों से मिलती जुलती है यानी आ'माल में ही निफाक है और आ'माल में निफाक ईमान को नाक़िस (अधुरा) कर देता है।(इस मुनाफिक़ को फासिक व फाजिर भी कहा जाता है जो 2 किस्म के है 1. फासिक़े

मोअल्लिन, 2 फासिके बातिन) (मुन्तख़ब हदीसें, पेज 66,अब्दुल मुस्तफ़ा आज़मी)

मोमिन और मुनाफिक़ ए अमली में फर्क

रसूलुल्लाह से मोमिन और मुनाफ़िक़ के मुतल्लिक पूछा गया। आप ने फरमाया कि **मोमिन** की हिम्मत नमाज़ और रोज़े की तफ़ रहती है और **मुनाफ़िक़** की हिम्मत जानवरों की तरह खाने पीने की तरफ रहती है और वोह नमाज़ रोज़े की तरफ़ मुतवज्जेह ही नहीं होता। **मोमिन** अल्लाह की राह में खर्च करने और बख़्शिश तलब करने में मशगूल रहता है जब कि मुनाफ़िक़ हिर्स व हवस में मसरूफ रहता है, मोमिन अल्लाह तआला के सिवा किसी से उम्मीद नहीं लगाता और मुनाफिक अल्लाह तआला के सिवा तमाम मख़्लूक की तरफ रुजूअ होता है, **मोमिन दीन को माल से मुक़द्दम समझता है** और **मुनाफ़िक़ माल को दीन पर तरजीह देता है**, मोमिन अल्लाह के सिवा किसी से नहीं डरता और मुनाफिक अल्लाह के सिवा हर चीज़ से डरता है, मोमिन नेकी करता है और अल्लाह की बारगाह में रोता है, मुनाफ़िक़ गुनाह करता है और खुश होता है, मोमिन खल्वत व तनहाई को पसन्द करता है, मुनाफ़िक भीड़ भाड़ और मेल जोल को पसन्द करता है, मोमिन बोता है और फ़स्ल की बरबादी से डरता रहता है और मुनाफ़िक़ फ़स्ल उजाड़ देने के बा'द काटने की तमन्ना रखता है। मोमिन दीन की तदबीर के साथ अच्छाइयों का हुक्म देता है, बुराइयों से रोकता है और इस्लाह करता है, मुनाफ़िक़ अपनी हैबत और सत्वत के लिये फ़ितना व फसाद बरपा करता है और नेकियों से रोकता और बुराइयों का हुक्म देता है। (मुकाशफतुल कुलूब, बाब 7, पेज 64)

अल्लाह तौबा से राज़ी होता है

फरमाने नबवी है कि रहमते खुदावन्दी को उस इन्सान की तौबा से ज़्यादा खुशी होती है (मिसाल) जो बीरान जंगल में अपनी सवारी पर खाने पीने के सामान लादे सफर कर रहा हो और वहां आराम की ग़रज़ से रुक जाए, वह सर रखे तो उसे नीद आ जाये.. जब सो कर उठे तो उस की सवारी सामान के साथ गाइब हो और वह उस की तलाश में निकले यहां तक कि सख्त गर्मी और प्यास से बद-हाल होकर उसी जगह वापस आ जाये जहां वह पहले सोया था और मौत के इन्तेज़ार में अपने बाज़ू का तकिया बना कर लेट जाये, अब जो वह जागा तो उसने देखा उस की सवारी सामान के साथ उस के करीब मौजूद है। इसें देखकर वह बहुत खुश हुआ । अल्लाह त'आला को बन्दे की तौबा से उस सवारी वाले शख़्स से भी ज्यादा खुशी होती है जिस का सामान जागने के बाद उस को मिल गया है। (मुकाशफतुल कुलूब, बाब 34, पेज 229)

अल्लाह ईमान व अक़ाइद से राज़ी होता है

जान लो कि अल्लाह को राज़ी करने के लिए तौबा व ईमान शर्त है और ईमान **करने**

का नाम नहीं बल्कि हक को **मानकर** नेक बनने का नाम है। जब तक इंसान पूरी तरह ईमान ना लाये तब तक वो अमल करने के क़ाबिल यानी दीनदार नहीं बनता और उस पर नेक अमल करना फ़र्ज़ नहीं करार दिया जाता है। यानी पहले ईमान (यानी बनों) फिर अमल (यानी करो) अल्लाह फ़रमाता है (तर्जुमा) : **बेशक जो ईमान लाए और (उसके बाद) अच्छे काम किये उनका रब उनके ईमान के सबब (राज़ी होकर) उन्हें राह देगा , उनके नीचे नेहरें बहती होंगी नेअमत के बाग़ों में।** (सूरह युनुस, आयत 9)

पहले मांगने के लायक बनो

अल्लाह फ़रमाता हैः पुकारने वाले जब मुझे पुकारे तो उन्हें चाहिए मेरा हुक्म मानें और मुझ पर ईमान लायें कि कहीं राह पाये (यानी कामयाब हो जाये)। (सूरह बक़रह, आयात न. 186)

नसीहत : आज जान लो इस रात का मक़सद है तौबा करके अच्छा और सच्चा बनना यानी आज नेक **बनने** की रात है न कि **इबादत** करने की, हाँ हक़ीक़त यही है, पूरी ज़िन्दगी तो इबादत के लिए है लेकिन आज की रात तौबा करके ईबादत करने की काबिल बनने की रात है । अगर आपके गुनाहों के वजह से अल्लाह नाराज है तो आपका नफ्ल नमाजे कोई काम की नहीं इसलिए पहले नेक बनों फिर नेकी करो यानी पहले अल्लाह को राज़ी करो फिर अल्लाह की इबादत करो। इंसान ईमान के वजह से नेक, अच्छा और सच्चा बनता है। क़ुरआन में अल्लाह फ़रमाता है

(तर्जुमा कंज़ुल ईमान) : **''बेशक जो ईमान लाए और अच्छे काम किये उनका रब उनके ईमान के सबब उन्हें राह देगा''।** (सूरह युनुस, आयत नं. 9) दुसरी जगह फ़रमाया (तर्जुमा कंज़ुल ईमान) : **''जो कुछ भले काम करे और हो ईमान वाला तो उसकी कोशिश की बेक़दरी नहीं, और हम उसे लिख रहे हैं।** (सुरह अंबिया, आयत न. 94) इस फ़रमान से पता चला कि ईमान वालों की कोशिश की कद्र की जाएगा। इसलिए पहले पूरी तरह से मोमिन बनों

दुसरी जगह क़ुरान में है : **अल्लाह दुआ कुबूल फ़रमाता है उनकी जो (पहले) ईमान लाए और (बाद में) अच्छे काम किये।** (सूरह शूरा, आयत न. 26)

''न सुस्ती करो और न ग़म खाओ तुम्ही ग़ालिब आओगे अगर ईमान रखते हो'' (सूरह इमरान, आयत न 139) फिर फ़रमाया

(तर्जुमा कंज़ुल ईमान) :**''अल्लाह तुम्हें अज़ाब देकर क्या करेगा अगर तुम हक़ मानो और ईमान लाओ।''**(सूरह निसा, आयत 147) पता चला अल्लाह ईमान से राज़ी होता है , बग़ैर मज़बुत ईमान का अमल नामक़बूल होता है लिहाजा आपको बहुत सी बातों पर ईमान लाने की जरूरत है। अल्लाह वालों ने किताबों में लिखा

(तर्जुमा) : **जब तक हम अल्लाह त'आला की सिफ़ात पर ईमान नहीं लायेंगे तब तक मोमिन नहीं। हमें अल्लाह त'आला की हर सिफ़त को मानना पड़ेगा। जो चीज भी अल्लाह त'आला ने बनाया है उसमें भी कोई ना कोई सिफ़त जरूर रखा है।** (बहरुल हक़ायक़, पेज 250) दुसरी जगह मीर सैय्यद अब्दुल वाहिद बिल ग्रामी लिखते है **"ऐ सच्चे सुन्नी तुझे बहुत सी बातों पर भी ईमान लाना जरूरी है इसलिए कि अल्लाह त'आला को तू देख नहीं सकता। और फरिश्ते न तुझे महसूस हैं न वह तेरी नजर में समाए हुए और तमाम नबियों और रसूलों ने पर्दा फरमाया और रहमत की आराम गाहों में आराम कर रहे हैं और आखिरत की तमाम बातें और क्यामत की हालतें आने वाली चीजें है लिहाजा तू इन सब पर बे देखे ईमान ला" जो इल्मे जाहिर व बातिन से मुमकिन है इस इल्म को पाने की चाहत रख ताकी अल्लाह तुझे उस लायक बनाये।** (सबअ सनाबिल शरीफ़, सुंबुला 1, पेज 37) इससे पता चला ईमान एक चीज का नाम नहीं सिर्फ अल्लाह को न मानों बल्कि अल्लाक के हर फ़रमान को भी मानों।

आख़िरत पर ईमान लाना

शेरे खुदा हज़रत अली रदीअल्लाहु अन्हु फ़रमाते है: अगर अल्लाह त'आला और आख़िरत के साथ तेरा यकीन ठीक होता तो आख़िरत की बाकी रहने वाली नेमतों के साथ दुनिया की फ़ानी चीज़ कभी इख़्तियार नहीं करता (यानी दुनियादार नहीं बनता) और आला दर्जे की चीज़ों (यानी उख़्रवी नेएमतों) को कम दरजा (यानी दुनियावी दौलत) और बिल्कुल फ़ानी और लानती चीज़ों के साथ कभी फ़रोख़्त नहीं करता। जब तू दुनिया से मुंह फ़ेर ले और आख़िरत का चाहने वाला हो जाए तो समझ के तेरा तीर निशाने पर लग जाएगा तेरे के लिए कामयाब के दरवाज़े खुल गए और हर तरह की ख़ैर व भलाई के साथ तू क़ामयाबी हो गया। जो शख़्स आख़िरत का यकीन रखता है वो दुनिया की लालच नहीं करता। जो शख़्स आख़िरत पर यकीन रखता है। वो दुनिया से मुंह मोड़ लेता है। (अक़वाले हज़रत अली, पेज 50)

असल नेकी ईमान और ईमान की खसलतें हैं

अल्लाह फ़रमाता है (तर्जमा) : असल नेकी येह नहीं कि मुँह मशरिक़ या मग़रिब की तरफ़ करो (नमाज़ की शक्ल में) हाँ असल नेकी येह कि ईमान लायें अल्लाह और कयामत और फरिश्तों और किताब और पैग़म्बरों पर और अल्लाह की महब्बत में अपना प्यारा माल खर्च करे रिश्तेदारों और यतीमों और मिस्कीनों और राहगीर और साइलों को और गरदने छुड़ाने में और नमाज़ कायम रखें और ज़कात दें और जब अहद करें तो अपना कौल (वादा) पूरा करने वाले और मुसीबत, सख्ती में और जिहाद के वक़्त सब्र वाले यही हैं जिन्होंने अपनी बात सच्ची की और यही परहेज़गार है। (सूरह बक़रह,

आयत न. 177)

सबसे अफ़ज़ल अमल ईमान लाना है

हज़रते सय्यिदुना उबादा बिन सामित बयान करते हैं कि एक शख्स ने बारगाहे रिसालत में हाज़िर हो कर अर्ज की : "अफ्ज़ल आ'माल कौन से हैं?" हुस्ने अख़लाक़ के पैकर, महबूबे रब्बे अक्बर ने इरशाद फ़रमाया : "अल्लाह पर ईमान लाना, उस की तस्दीक़ करना, अल्लाह की राह में जिहाद करना (हुस्ने अख़लाक़, पेज 71)

इंसान सिर्फ अल्लाह की इबादत के लिए बनाया गया

कुरआन में है : इंसान सिर्फ अल्लाह की इबादत करने के लिए बनाया गया। (सूरह हुज़रात, आयत न. 56)

इंसान का असल मक़सद अपने आप को पहचानना है क्योंकि जब इंसान खुद के करीब होकर अपने आप को नही पहचानेगा तो अल्लाह को कैसे पहचानेगा और जब अल्लाह को नही पहचानेगा तो अल्लाह की इबादत कैसे करेगा लेकिन जब बंदा खुद को पहचान लेगा तो अल्लाह की हक़ीक़त जान जायेगा और इबादत गुज़ार बनकर अल्लाह को राज़ी कर लेगा।

कौल : जिसने खुद को पहचान लिया उसने खुदा को पहचान लिया। (बायजीद बुस्तामी)

ईबादत 3 कामों को करने का नाम है

1. ईमान दिल से मानने का नाम है।
2. इल्मे दीन जो अक़्ल से जानने का नाम है
3. नेक अमल जो ज़िस्मनी आज़ा से करने का नाम है।

लिहाज़ा अल्लाह और उसके रसूल के जात और सिफ़ात पर मज़बूती से ईमान लाने की चाहत व कोशिश करो और जिन बातों पर ईमान लाने का हुक़्म है जैसे आसमानी किताबो, फ़रिश्तों, आख़िरत, तक़दीर पर पुख्ता ईमान लाओ।

और उस बातों को जानने की चाहत व कोशिश करो जिससे ईमान की हिफाज़त होती है जिसे अल्लाह और उसके रसूल ने फ़रमाया है ।

और तीसरा उन अच्छे कामो को करने का कोशिश करो जो ईमान को क़ामिल और बुलंदी दरजात का जरिया है। जिसे करने का हुक़्म अल्लाह तुम्हे कुरआन व हदीस में दिया है।

इंसान को बनाने का मक़सद 3 कामों के लिए

अल्लाह इंसान को इन्ही 3 बातों पर अमल करने के लिए बनाया है। पूरी कुरआन व अहादीस इन्ही 3 बातों का पैग़ाम देती है। यही 3 नुक्ते आख़िरत के लिए है ।इसके अलावा जितने भी है सब दुनिया, फ़िज़ूल, बेकार, फ़ानी और बातिल है जो इस तीन बातों पर

अमल करने के लिए खतरा है यानी उन 3 बातों पर अमल करनें के लिए रुकावट है।

हदीस :- तिर्मिज़ी व अबू दाऊद और इब्ने माजा ने उक़्बा इब्ने आमिर रदियल्लाहु त'आला अन्हु से रिवायत की कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु त'आला अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जितनी चीज़ों से आदमी लह्व (खेल तमाशा, टाइम पास) करता है सब बातिल (अल्लाह और दीन से दूर करने वाला) हैं (इस्लामी अख़लाक़ व आदाब, हिस्सा 16)

इन तीन बातों पर ग़ौर करों

1 ईमान 2 इल्म 3 अमल

इन तीनों बातों में सबसे पहला दर्जा पर ईमान को रखा गया है फिर इल्म को फिर अमल को यानी इल्म और अमल, ईमान के ताबे (नीचे) है। बग़ैर ईमान का कोई इल्म और कोई अमल क़बूल न किया जाएगा। इल्म व अमल की क़ुबूलियत के लिए ईमान व अक़ाइद शर्त है। इसलिए मुसलमान को सबसे पहले ईमान संवारना और मजबूत करना चाहिए वरना । ईमान का जायज़ा लिए बग़ैर अमल के लिए तैयार नहीं हो जाना चाहिए।

नमाज व रोज़ा ईमान का हिस्सा नहीं

अकीदा :- अस्ले ईमान सिर्फ तस्दीक़ का नाम है यानी जो कुछ अल्लाह व रसूल ﷺ ने फ़रमाया है उसको दिल से हक़ मानना । आ'माल (यानी नमाज़, रोज़ा वग़ैरह) ईमान का हिस्सा नहीं। (बहारे शरीअत, हिस्सा 1, ईमान व कुफ़्र का बयान, पेज 47, हिन्दी)

ज़िस्मानी ज़ाहिरी अमल ईमान नहीं

अमले जवारेह यानी हाथ पैर वग़ैरह से किए जाने वाले अमल या काम (जैसे, नमाज़, रोजा, तिलावत, तस्बीह वगैरह) ईमान के अन्दर दाखिल नहीं है।(बहारे शरीअत, हिस्सा 1, ईमान व कुफ़्र का बयान, पेज 48, हिन्दी)

वोह नमाज़ी जो मोमिन नहीं

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र (रदीअल्लाहु त'आला अन्हुमा) से रिवायत है कि नबी अकरम ﷺ ने फ़रमाया कि लोगों पर एक ऐसा ज़माना भी आयेगा कि वो मस्जिदों में इकट्ठे होंगे और बा जमाअत नमाज़ पढ़ेंगे लेकिन उनमें मोमिन न होगा। (इब्ने अबी शैबा 6/163-हदीस 30355, (इमाम हाकिम-अल इमाम मुस्तदरक- 4/489-हदीस-8365)

ईमान ही अमल करने के क़ाबिल बनाता है।

ईमान सबसे बड़ी दौलत है, ईमान है तो अल्लाह साथ है, अल्लाह की रहमतें और बरकतें है। ये बात अच्छी तरह जान लो कि इन्सान की क़ाबिलियत और आ'माल की क़बूलियत के लिए ईमान शर्त है।ईमान एक चीज़ का नाम नहींयेह बात अच्छी तरह से जान लो कि ईमान एक चीज़ का नाम नहीं। ईमान एक दरख़्त की मानिन्द है और ईमान की खसलतें उस दरख़्त की शाख की मानिंद। दरख़्त यानी कामिल ईमान जो हुज़ूर की

महब्बत व तअज़ीम है और शाखें यानी ईमान की खसलतें इश्के नबी और तअज़ीमे नबी के बाद की खसलतें है। जब दरख्त ही न हो तो उसकी शाख़ कैसी यानी जब इश्के नबी और तअज़ीमे नबी न हो तो बाकी खसलतें कैसी । बग़ैर इश्के नबी और तअज़ीमे नबी के तमाम खसलतें फिस्क व निफाक़ में शुमार होंगे और इल्म व अमल बेकार। (मुसन्निफ)

अमल करने से पहले ईमान का जायजा लो

ऐ दुनियादार फासिक व फाजिर इंसान आज तू पहले अपना ईमान का जायजा ले और जरा सोंच और अपनी गुजरी हुई ज़िन्दगी पर गौ़र व फिक्र कर कि गुनाहों के जरिए तुम्हारा जुर्म और जुल्म कितना है क्या तू अल्लाह के नजदीक ईमान वाला है अगर है तो कितना मजबूत ईमान है। कमजो़र ईमान से अल्लाह राजी़ नहीं होता इसलिए ईमान के लिए अच्छा और सच्चा इंसान बन। नेकों की सोहबत इख़्तियार कर ताकि तू भी नेक बन सके फिर अमल के मैदान में उतर वरना कमजो़र ईमान वालों को नफ़्से अम्मारा, शैतान , दुनिया व मालो दौलत गुमराह करके कुफ्र की हद तक पहुंचा देता और इंसान को पता भी नहीं चलता ।इसलिए होशियार हो जा। (मुसन्निफ)

ईमान वालों के अमल की क़द्र की जाएगी

अल्लाह फ़रमाता है : तर्जमा : जो कुछ भले काम करेगा मर्द हो या औरत और हो ईमान वाले तो वो जन्नत में दाखि़ल किये जाएंगे और उन्हें तिल भर नुक़सान न दिया जाएगा (कंजु़ल ईमान, सुरह निसा, आयत न. 124)

अल्लाह मोमिनों पर फ़ज़्ल करता है

कुरआ़न में हैः अल्लाह मोमिनों पर फ़ज़्ल करता है।(सूरह इमरान, आयत न. 152)

ईमान वालों के लिए अमान

अल्लाह फ़रमाता है : (तर्जमा कंजु़ल ईमान) : वो जो ईमान लाए और अपने ईमान में किसी नाहक़ (बातिल) चीज़ की आमेज़िश (मिलावट) न की उनहीं के लिये अमान (हिफाज़त) है और वही राह पर हैं। (सूरह अन'आम, आयत न. 82)

ईमान वालों के लिए जन्नत

अल्लाह फ़रमाता है : (तर्जमा कंजु़ल ईमान) : जो ईमान लाए और ताक़त भर अच्छे अमल किये हम किसी पर ताक़त से ज़्यादा बोझ नहीं रखते, वो जन्नत वाले हैं उन्हें उस में हमेशा रहना (सुरहः अराफ़, आयत न. 42)

मोमिन की इज़्ज़त का'बे से ज़्यादा है

हज़रते अब्दुल्लाह बिन उमर रदीअल्लाहु त'आला अन्हुमा फरमाते हैं मैंने हुजूर सैय्यदे आलम ﷺ को देखा कि काबा मुअज्जमा का तवाफ़ करते और फ़रमातेः ऐ काबा तू कितना पाकीज़ा है और तेरी खुशबू कितनी पाकीज़ा है, तू कैसा अज़ीम है और तेरी हुर्मत

कितनी बड़ी है, क़सम उसकी जिसके कब्ज़-ए-कुदरत में मुहम्मद ﷺ की जान है बेशक अल्लाह त'आला के नज़दीक मोमिन की इज़्ज़त तेरी इज़्ज़त से बहुत ज़्यादा है। (फ़ैज़ाने आला हज़रत, पेज न. 79)

अमल से पहले इल्म हासिल करो

जान लो की इल्म के बग़ैर अमल दुरुस्त नहीं क़रीब है बग़ैर इल्म का अमल रियाकारी, खुदपसन्दी और नामो नूमूद के लिए होगा। ऐसे अमल अल्लाह के लिए नहीं इस बुनियाद कर अल्लाह ऐसे अमल को क़बूल नहीं करता।

अमल से पहले इल्म हासिल करने का हुक्म है

किताब मिन्हाजुल आबिदीन में इमाम ग़ज़ाली रहमतुल्लाह अलैह तहरीर फ़रमाते है ऐ अज़ीज़ ! तू यकीन कर कि इन दो के सिवा जो कुछ दुन्या में है सब बातिल है क्योंकि ईमान जैसी कीमती दौलत की हिफ़ाज़त इन्ही दोनों के जरिये मुमकिन है इसके अलावा जो कुछ है फुजूल है जिससे कुछ हासिल नहीं और उससे कोई भलाई नहीं ।

जब तेरे ज़ेहन में इल्म व इबादत की अहम्मिय्यत आ गई तो अब येह बात समझ कि इल्म इबादत से अफ़ज़ल व अशरफ़ है इसी लिये नबिय्ये करीम ने फ़रमाया : आलिम की फ़ज़ीलत आबिद पर ऐसी है जैसी मेरी अपने अदना उम्मती पर ।

एक जगह आप ﷺ ने फ़रमायाः आलिम की तरफ़ एक बार नज़र मेरे नज़दीक एक बरस रोज़े रखने और एक बरस रात को नवाफ़िल पढ़ने से बेहतर है।

एक और जगह आप ﷺ ने फ़रमायाः क्या मैं तुम्हें सब से ज़ियादा बुलन्द मर्तबे वाले जन्नती न बताऊं ? सहाबा रदिअल्लाहो अन्हु ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह बताइये, तो आप ने फ़रमाया कि वोह मेरी उम्मत के उलमा है।

मुन्दरिजए बाला (उपर) अहादीस से साबित हुवा कि इबादत से इल्म अफ्ज़ल है लेकिन इल्म के साथ साथ इबादत भी ज़रूरी है बग़ैर इबादत इल्म का कोई फाइदा नहीं क्यूंकि इल्म दरख़्त की मानिन्द है और इबादत फल की तरह और दरख़्त की क़द्र फल से होती है, अगर्चे दरख़्त अस्ल है, लिहाजा बन्दे के लिये इल्म व इबादत दोनों का होना ज़रूरी है।

इल्म इबादत की बुन्याद

इसी लिये हज़रते हसन बसरी ने फ़रमाया : "इल्म को इस तरह हासिल करो कि इबादत को नुक्सान न दे और इबादत इस तरह करो कि इल्म को नुक्सान न हो।" और येह बड़ी पुख़्ता बात है कि इल्म व इबादत दोनों ज़रूरी हैं मगर पहले इल्म हासिल करना ज़रूरी है क्यूंकि इल्म इबादत की बुन्याद और इस का रहनुमा है इसी लिये नबिय्ये करीम ﷺ ने फरमाया :"इल्म अमल की बुन्याद है और अमल इस के ताबेअ है"।(अत्तरगिब व तरहीब)

इल्म सीखना, इबादत करने से बेहतर है :

हज़रते हुज़ैफा बिन यमान रदीअल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि रसूले खुदा सललल्लाहो अलैहे व सल्लम ने फरमाया "इल्म की फज़ीलत, इबादत की फज़ीलत से बेहतर है" (यानी पहले इल्म फिर अमल) (बज़्ज़ाज़)

इल्म वाले ही अल्लाह से डरते है

अल्लाह फ़रमाता है : (तर्जमा) अल्लाह से वही डरते हैं जो इल्म वाले हैं।(कंज़ुल ईमान, सूरह फ़ातिर, आयत न 28)

अल्लाह से डरने वाले यानी इल्म वाले ही शैतान से बचते है:

अल्लाह फ़रमाता है : (तर्जमा) बेशक वो जो डर वाले हैं जब उन्हें किसी शैतानी ख़याल (वसवसों) की ठेस लगती है होशियार हो जाते हैं उसी वक़्त उनकी आँखें खुल जाती हैं। । (कंज़ुल ईमान, सूरह आराफ़, आयत न 201)

अल्लाह डरने वालों (इल्म वालों) के साथ है

अल्लाह फ़रमाता है : (तर्जमा) : बेशक अल्लाह उनके साथ है जो डरते हैं और जो नेकियां करते हैं। (कंज़ुल ईमान, सूरह - नहल, आयत न. 128)

सिर्फ इल्म वाले ज़िंदा है

इमाम ग़ज़ाली रहमतुल्लाह अलैह फ़रमाते है तमाम इंसान मुर्दा हैं ज़िंदा वो हैं जो इल्म वाले हैं, तमाम इल्म वाले सोये हुए हैं बेदार वो हैं जो अमल वाले हैं,तमाम अमल वाले घाटे में हैं फायदे में वो हैं जो इख्लास वाले हैं,तमाम इख्लास वाले खतरे में हैं कामयाब वो हैं जो तकब्बुर से पाक हैं।

दुनियावी इल्म की मोहब्बत बातिल है

आप जानते है कोई भी इंसान दीनी इल्म को छोड़ कर दुनियावी ईल्म हासिल करता है इसके पीछे ज्यादा से ज्यादा माल व दौलत कमाने के नियत रहती है । अल्लाह को भूल कर नौकरी तलाशते है।

दुनियावी इल्म की मज़म्मत (खराबियां)

दुनियावी इल्म को तरजीह (प्राथमिकता) देने वाले मुसलमान दीन से दूर होकर दुनियादार बन जाते है, दुनियावी इल्म की तलब में मुसलमान बेपर्दा और बेहया बन जाते है, दुनियावी इल्म को तरजीह देने वाले मुसलमान मुतक़ब्बिर (तकब्बुर करने वाले) बन जाते है। दुनियावी इल्म को तरजीह देने वाले काफ़िरो के तौर तरीके को फख्र से अपना लेते है। दुनियावी इल्म को तरजीह देने वाले मुसलमान गुनाहों से नही बच पाते है।दुनियावी इल्म को तरजीह देने वाले मुसलमान दीन को हक़ीर जानते है। दुनियावी इल्म को तरजीह देने वाले मुसलमान आख़िरत की तैयारी नही कर पाते है।

दौलत और औरत से बचो

हदीसः- हज़रत अबु सईद खुदरी से मरवी है कि रसूल ﷺ ने फ़रमायाः "दुनिया मीठी और हरी भरी है और यक़ीनन अल्लाह त'आला तुमको इसमें दूसरों के पीछे मालिक करेगा। फिर आज़माएगा कि क्या अमल करते हो? लिहाज़ा दुनिया से दूर रहो ! और औरतों से बचो क्योंकि बनी इस्राईल (पिछली उम्मत) का पहला फ़ितना औरतों (बेपर्दगी) ही से हुआ।" (मुस्लिम शरीफ जिल्द 2, पेज 353)

माल की इब्तेदा पर शैतान का खुश होना

कुत्बुल अकताब ने अपनी ज़बान मुबारक से फरमाया अल्लाह और बंदों के बीच दुनिया से ज़्यादा कोई हिजाब नहीं। जिस कद्र दुनिया में मुब्तला हो जाता है उसी क़द्र खुदा से दूर और जुदा हो जाता है। हज़रत कुत्बुल आफताब ने फ़रमाया कि अल्लाह त'आला ने जिस वक़्त दुनिया की मुहब्बत (रुपया पैसा) को यहाँ भेजा तमाम फरिश्ते रो पड़े, मगर शैतान खुश होकर कहने लगाः अच्छा हुआ औलादे आदम में फितना तो पैदा हुआ। उसकी मोहब्बत की वजह से भाई-भाई को मार डालेगा और अपनों में मुहब्बत न रहेगी।

शहर के शहर उसी की मुहब्बत में ख़राब और वीरान हो जाएँगे, एक दुसरे में जुदाई और अदावत पैदा होगी और आख़िरकार खुद ही हलाक हो जाएँगे, मगर दुनिया बरकरार रहेगी।

अलगरज़ इस दुनियावी दौलत की मोहब्बत को शैतान ने सर आँखों पर रखा। बड़ी ताज़ीम व तकरीम की। फरमाने खुदावन्दी हुआः "इबलीस तूने दुनिया की मुहब्बत (यानी माल व दौलत) की हद से ज़्यादा ताज़ीम क्यों की!" इब्लीस ने कहाः मैंने इसलिए इस दुनिया की ताज़ीम की कि जो कोई इसे दोस्त रखेगा वह मेरे दोस्तों में से होगा। मैं उसको यार बनाकर फरेब दूँगा और मुरदार दुनिया में उसे फँसाकर तमाम इबादात और खैरात से अलग रखूँगा। पस जब दुनियादार मेरे पास होगा जल्द हलाक होगा और उसका माल दूसरों को नसीब होगा। (हज़रत बख़्तियार क़ाकी, पेज 119)

दुनियावी माल से मुतअल्लिक़ इब्लीस और ग़ौसे आज़म की बात चीत

हिकायत : एक रोज़ हज़रत पीर दस्तगीर महबूबे सुबहानी रहमतुल्लाह अलैह अपने घर से बाहर निकले तो उन्होंने अपने घर के दरवाज़े पर इब्लीस को खड़े देखा। गौसे पाक ने पूछा ऐ लानती इब्लीस तू यहाँ क्यों आया है? चला जा इब्लीस कहने लगा'' ऐ ग़ौसे आज़म एक गुलाम दुनिया का पैसा (माल) ले कर अंदर गया है। मैं उस पैसे के इंतज़ार में खड़ा हूँ। दुनिया का पैसा मेरी मताए क़लील है. (औरत के हैज़ आलोदा कपड़े को भी क़लील कहते हैं यानी माल भी मिसाल हैज़ आलूदा कपड़े से लिया गया है।

इरशाद बारी त'आला हैः तर्जुमाः (ऐ नबी फ़रमा दे के दुनियावी दौलत क़लील है)

इब्लीस ने कहा" ऐ पीर जो लोग भी दुनिया के माल पर नज़र रखते हैं वो मेरी जान, शयातीन (शैतानी फौज) के भाई और गुमराह हैं। मेरी लानत में वो भी शामिल हैं।

हज़रत पीर दस्तगीर रदीअल्लाहु अन्हु अंदर तशरीफ़ ले गए और अंदर से दुनिया का पैसा ला कर इब्लीस को दे दिया। इब्लीस शैतान ने दुनिया के पैसे को ले कर चूमा और अपनी आंखों से लगाया। हज़रत पीर दस्तगीर कुद्स सिराह ने फ़रमाया ए लानती तू ने दुनिया के पैसे को यूं (क्यों चूमा और हाथ से लगाया) ? इब्लीस ने कहा'' ऐ पीर दस्तगीर दुनिया का माल मेरा जिस्म और जान है। जो कोई दुनिया के पैसे को -अपने हाथ में लेता है, इस पैसे की तासीर इस के हाथ से दिल तक चली जाती है। जैसा ही कोई इस पैसे को अपने हाथ में पकड़ता है उसका दिल सियाह हो जाता है। वो नेकी के रास्ते से मुंह मोड़कर कर ख्वाहिसाते नफ़्स, हिर्स, हसद, लालच और इस जैसा दूसरे बुरे अफ़आल (काम) की तरफ माएल हो कर गुमराह हो जाता है।

इब्लीस ने कहा" ए पीर दस्तगीर ख्वाहिसाते नफ़्स रखने वाले चाहे आलिम हो या फ़ाज़िल, जाहिल हो या फ़कीर वो मेरे तालिब (पाने की चाहत) और मेरे मुरीद हैं।

दुनिया मेरी मुरीद है और इस के गुलाम मेरे गुलाम हैं। जिस घर में पैसा आ जाता है उस घर का हर फर्द मेरा भाई बन जाता है। मैं इस घर में रहने वाले-अपने हर भाई की जान ले कर उस का ईमान सल्ब कर (निकाल) लेता हूं। ये कहना झूठ होगा के मैं उस पर राहे हक़ बंद नहीं कर देता हत्ता के अल्लाह और रसूल की बात उसे बुरी लगती है।

अपने जाहिर को अरस्ता कर के इस के दिल को सुकून मिलता है। सात रंगों में से हर रंग में दुनिया के पैसे की ज़ीनत उसे दिखाता हु और फ़रेफ़्ता कर के उसे फ़रेब देता हूँ ताके इस की नज़र में (दुनियावी माल के लिए) नियाज़मंदी रहे और इसी की ज़ैब ओ आराइश से इस का दिल अरस्ता रहे (यानी इस के दिल में कुर्बे इलाही की आरज़ू ही पैदा नहीं हो सके)।

हज़रत पीर दस्तगीर रहमतुल्लाह अलैहि ने फरमाया'' ऐ लानती तेरा सब से बड़ा दुश्मन कौन है?

इब्लीस ने कह 3 क़िस्म के लोग मेरे सख्त दुश्मन हैं जो मेरी जान पर तीर चलाते रहते हैं।

पहला दुश्मन अमल करने वाला औलमा है जिसके इल्म का चिराग दुनिया में रौशन है।

दूसरा दुश्मन फकीरे कामिल है जो ज़िक्रे इलाही और मारफते इलाही (अल्लाह की पहचान) की तलवार से मुझे या मेरे भाई नफ्से अम्मारा को कत्ल करता है।

तीसरा दुश्मन सखी (अल्लाह के राह में माल खर्च करने वाला) है जो सखावत की छुरी से मेरे दोनों हाथ काट देता है क्योंकि सखावत करते वक्त मैं सखी के दोनों हाथ पकड़ लेता

हूं ताके वो अल्लाह के राह में कुछ नहीं खर्च कर सके। (गंजूल असरार, पेज 34, 35)

शैतान ने दौलत को चूमा

हज़रते हसन रहमतुल्लाह अलैह का कौल है जिस ने दौलत को इज्जत दी अल्लाह ने उसे जलील किया। कहते हैं जब रुपया पैसा बनता है तो सब से पहले शैतान उन्हें उठा कर माथे से लगा कर चूमता है और कहता है। जिस शख्स ने तुम से मुहब्बत की वह यकीनन मेरा बन्दा है। (मुकाशफतुल कुलूब, बाब 38, पेज 250)

माल दौलत की लालच ही दुनियादारी है

अल्लाह फ़रमाता हैः तुम्हें ग़ाफ़िल रखा माल की ज़ियादा तलबी (लालच) ने , यहाँ तक कि तुमने क़ब्रों का मुंह देखा (यानी मर गया) हाँ हाँ जल्द जान जाओगे (आख़िरत में), फिर हाँ हाँ जल्द जान जाओगे, हाँ हाँ अगर यक़ीन का जानना चाहते तो (अगर हक़ीक़त जानने का कोशिश करते) तो माल की मोहब्बत न रखते (सुरहः तकासुर, आयत न 1-5)

माल की मुहब्बत ही दुनियादारी है

हज़रते अताअ बिन जियाद कहते हैं मेरे सामने दुनिया तमाम जीनतों से सज कर आई तो मैं ने कहा मैं तेरी बुराई से अल्लाह की पनाह चाहता हूं। दुनिया ने कहा अगर तुम मेरे शर (ख़तरात) से बचना चाहते हो तो रुपये पैसे से दुश्मनी रखो क्यों कि दौलत और रुपये पैसे हासिल करना दुनिया को हासिल करना है जो उन से अलग थलग रहे वह दुनिया से बच जाता है। (मुकाशफतुल कुलूब, बाब 38, पेज 251)

अल्लाह को भूलने वाले मुसलमान नुकसान में

अल्लाह फ़रमाता हैः ऐ ईमान वालो, तुम्हारे माल न तुम्हारी औलाद कोई चीज़ तुम्हें, अल्लाह के याद से ग़ाफ़िल न करे और जो ऐसा करे तो वही लोग नुक़सान में हैं (सुरहः मुनाफिकीन, आयत न 9)

अल्लाह को भूलने का अंजाम

अल्लाह फ़रमाता है : उन जैसे न हो जो अल्लाह को भूल बैठे तो अल्लाह ने उन्हें बला में डाला कि अपनी जानें याद न रही वही फ़ासिक़ हैं ।(सूरह - हस्र, आयत न. 19)

अल्लाह को भूलने वाला परेशान

अल्लाह फ़रमाता है :(तर्जुमा) जिसने मेरी याद से मुंह फेरा तो बेशक उसके लिये तंग ज़िन्दगी है और हम उसे क़यामत के दिन अंधा उठाएंगे।(सूरह ताहा, आयत 124)

अल्लाह को भूलने वाला शैतान का साथी है

अल्लाह फरमाता है : जिसे रतौंद (भुलना) आए रहमान के ज़िक्र से हम उस पर एक शैतान तैनात करें कि वह उसका साथी रहे (सुरहः ज़ुखरूफ़, आयत न. 36)

याद किया आबाद हुआ भूल गया बर्बाद हुआ

हज़रत सलमान फारसी रदीअल्लाहु अन्हु का इरशाद है कि बन्दा जब खुशी में अल्लाह को पुकारता फिर उसपर मुसीबत आ पड़ती है तो उस वक्त फरिश्ते बारगाहे इलाही में अर्ज करते हैं परवरदिगार! तेरे बन्दे पर मुसीबत आ पड़ी हैं, उसको दूर फरमा दे, इस तरह जब फरिश्ते उसकी सिफारिश करते हैं तो अल्लाह तबारक व त'आला उनकी सिफारिश कबूल फरमा लेता है।

और बन्दा अगर खुशी, ऐश व इशरत में अल्लाह को नहीं पुकारता (यानी याद नहीं करता) और दुख के वक्त पुकारता है तो फरिश्ते कहते हैं कि अब अल्लाह को पुकारता है और फरिश्ते उसकी शफाअत व सिफारिश नहीं करते, इसकी तौजीह फिरऔन के किस्सा से होती है कि जब डूबते वक्त फिरऔन ईमान लाया तो अल्लाह का इरशाद हुआ. अब तौबा करता है हालांकि पहले नाफ़रमानी करता रहा। (ग़ुनियतुत्तालिबीन, बाब 15, सफा 460)

दुनियादार मुसलमान और उसका अंज़ाम

आज मुसलमानों को दीनदार बनने की जरूरत है । ये बात समझ लेना चाहिए कि आज दुनियादारी के वजह से ईमान व अक़ीदे, इल्म व अमल नाकि़स (अधुरा व कमजोर) हो चुका है इसके वजह से मुआशरे में तमाम खराबियां, बुराइयाँ और गुमराहियाँ पैदा हुई है जिसके वजह से अल्लाह का अज़ाब, दुश्मने इस्लाम (कुफ्फार) के हौसले बढ़े,नफ्स और शैतान गालिब हुए, ज़ालिम बादशाह मुसल्लत किये गए, भगवा लव ट्रेप, मोबलीचिंग और यूनिफ़ॉर्म सिविल कोड जैसे मामले पैदा हुए, आपसी महब्बत खत्म हुई, बालितो से जिहाद व मुखालफल के बजाय इत्तेहाद और मुहब्बत की चाहत है । तमाम हालात का ईलाज यही है कि ईमान, इल्म व अमल को ताज़ा और मज़बूत किया जाए।

दुनियादारी के वजह से कलमा रद्द

हदीस : हज़रत अनस बिन मलिक रदिअल्लाहु अन्हु से रिवायत है के रसूल ﷺ ने फरमायाः " कलमा बंदों से खुदा के अजाब को रोकता है जब तक के बंदे दुनिया के मामले को दिन के मामले पर तरजीह न दे, लेकिन जब वो अपनी दुनिया के मामले को दिन के मामले पर तरजीह दे और फिर कलमा पढ़े तो ये कलमा उन पर रद्द कर दिया जाता है और अल्लाह त'आला फरमाता है के तुम झूठे हो। (इब्ने अबिददुनिया)

दुनियादारी के वजह से आमाल बेकार

अल्लाह फ़रमाता है : (तर्जुमा) **क्या हम तुम्हें बतादें कि सब से बढ़कर नाकि़स (अधूरा) अमल किन के हैं, उनके जिनकी सारी कोशिश दुनिया की ज़िन्दगी में गुम गई और वो इस ख़याल में हैं कि अच्छा काम कर रहे हैं।** (सुरह का'फ, आयत न.

103-104)

हजरते विश्र रहमतुल्लाह अलैह से कहा गया कि फला आदमी मर गया है. आपने फ़रमाया उस ने दुनिया को जमा किया और आखिरत को जाया कर दिया, लोगों ने कहा वह तो यह यह नेंकिया किया करता था। आप ने फरमाया जिस के दिल में दुनिया की मुहब्बत हो उसे नेकी नफा नहीं पहुंचाती। (मुकाशफतुल कुलूब, बाब 31, पेज 206)

दुनियादारी के वजह से दुआ़ रद्द

हिकायत : हज़रते मूसा अलैहिस्सलाम एक रोते हुए शख़्स के पास से गुजरे, जब आप वापस हुए तो वह शख़्स वैसे ही रो रहा था, मूसा अलैहिस्सलाम ने अल्लाह त'आला से अर्ज़ किया या अल्लाह! तेरा बन्दा तेरे डर से रो रहा है, अल्लाह त'आला ने कहा, ऐ मूसा! अगर आँसू के रास्ते उस का दिमाग़ बाहर निकल आए और उसके (दुआ के लिए) उठे हुए हाथ टूट जायें तब भी मैं उसे नहीं माफ करूँगा क्योंकि यह दुनिया से मुहब्बत रखता है। (मुकाशफतुल कुलूब, बाब 31, पेज 196)

दुनियादारों पर खास 4 अज़ाब

हजरते अली रजियल्लाहु अन्हु से मरवी है हुजूर ﷺ ने फ़रमाया जब लोग फकीरों से दुश्मनी रखें, दुनियावी शौकत व हशमत का इजहार करें और रुपया जमा करने पर लालची हो जायें तो अल्लाह त'आला उन पर चार मुसीबतें नाजिल फरमाता है,1 कहत साली, 2 जा़लिम बादशाह (जा़लिम प्रधानमंत्री), 3 खयानत दार हाकिम (मुख्य मंत्री, सदर व सेक्रेटरी) और , 4. दुश्मनों की हैबत (कुफ़्फार)।

मोबलिचिंग दुनियादारी के वजह से

हदीस : हजरत सोबान रदिअल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूल ﷺ ने फरमाया अन करीब तमाम धर्म की कौमे तुम पर यूं टूट पड़ेगी जैसे खाने वाले खाने के बर्तन पर टूट पड़ते हैं सहाबा रदिअल्लाह अन्हु ने कहा क्या ऐसा मुसलमानों की आबादी की कमी के वजह से होगा आपने फरमाया मुसलमान उस जमाने में ज्यादा होंगे लेकिन सैलाब की झाग (कोई काम का नही) की तरह, दुश्मन के दिल से मुसलमानों का रोब व दबदबा निकल जाएगा (यानी मुसलमानों से काफिर नहीं डरेंगे) तुम्हारे दिल में वहन डाल दी जाएगी सहाबा रदिअल्लाहु अन्हुम ने पूछा कि वहन क्या चीज है आपने फरमाया दुनिया से मोहब्बत और मौत से नफरत (सुनन इब्ने दाउद, हदीस न. 2245)

दुनियादारी के वजह से हुकूमत का छिन'ना

रसूल ﷺ ने फरमाया इस उम्मत को बशारत दे दो कि दीनदारी के वजह से ही उसको बुजुर्गी (मर्तबा) हासिल है और शहरों पर हुकूमत (कब्जा और गिरफ्त), जब तक वह दीन का काम दुनिया के हुसूल के लिए न करें यानी मुसलमानों को दुनिया में उस वक्त

तक बुजुर्गी और दुनिया के शहरों पर उनकी हुकूमत रहेगी जब तक वह दीन का काम दुनिया हासिल करने के लिए नही करेंगे, उनके आमाल खालिस रहेंगे। रसूल ﷺ ने इरशाद फरमाया कि आखिरत की नियत पर (अमल करने वाले को) अल्लाह त'आला दुनिया भी देता है लेकिन दुनिया की नियत पर अमल करने वाले को) आखिरत नही मिलेगी। (गुनियतुत्तालिबीन, बाब 17, पेज 505)

पिछली उम्मत दुनियादारी की वजह से हलाक़ हुए

फ़रमाने नबवी है दुनिया सब्ज़ (खुश आइन्द) और मीठी है। अल्लाह त'आला ने तुम्हें अपना ख़लीफा बना कर भेजा है और वह तुम्हारे आमाल से बा-ख़बर है। बनी इस्राईल पर जब दुनिया फ़राख़ कर दी गई तो उन्होंने अपनी सभी कोशिशें, जेवरात, कपड़ों, औरतों और इतरियात के लिए वक्फ कर दी थी। (और उनका अंजाम तुम ने देख लिया यानी वो हलाक हो गये) (मुकाशफतुल , बाब 31, पेज 188)

इस उम्मत के बदतरीन लोग मालदार

रसूल ﷺ से पूछा गया आप की उम्मत में सब से बुरे लोग कौन हैं? फ़रमाया दौलतमन्द। (मुकाशफतुल कुलूब, बाब 38, पेज 348)

इस उम्मत का फ़ितना माल (दौलत) है

हदीस : हज़रत कआब बिन इयाज रदिअल्लाहु अन्हु कहते हैं कि रसूलल्लाह सल लल्लाहो अलैहे व सल्लम का इर्शाद है कि हर उम्मत के लिये फितना है और मेरी उम्मत का फ़ितना 'माल है।" (तिर्मिज़ी)

कौन सी मालदारी बेहतर है

हज़रत अबूज़र रदीअल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि मैं सरकारे दो आलम सल लल्लाहो अलैहे व सल्लम की खिदमत में हाजिर हुआ आप सल लल्लाहो अलैहे व सल्लम काबा शरीफ के साये में तहरीफ फरमा थे। मुझे देख कर आपने फरमाया "कसम है परवरदिगारे काबा की वह (शख्स) बड़े टोटे (घाटे) में है।"

मैंने अर्ज किया "या रसूलल्लाह मेरे माँ-बाप आप पर फ़िदा हो वह कौन लोग है..." तब आपने फरमाया "माल को ज्यादा जमा करने वाले, मगर (वह लोग नही) जिन्होंने अपने आगे-पीछे और दाये बाये (अच्छे कामों में) खर्च किया और ऐसे लोग कम हैं।" (बुखारी, मुस्लिम)

माल कब फायदा देगा

हजरते अली रदीयल्लाहु अन्हु ने एक दिरहम हाथ पर रख कर फरमाया तू जब तक मुझ से जुदा नहीं होगा, मुझे कोई फाइदा नहीं देगा।

बेहतरीन दौलत

हजरते सुफियान रहमतुल्लाह अलैह का कौल है कि तुम्हारे लिए बेहतरीन दौलत वह है जो तुम्हारे कब्जे में नहीं है और कब्जे में आई हुई दौलत में वह बेहतरीन दौलत है जो तुम्हारे हाथ से निकल गई है। (मुकाशफतुल कुलूब, बाब 33, पेज 218)

हलाक़त (बर्बादी) खुद की वजह से

अल्लाह की राह में ख़र्च करो और अपने हाथों हलाक़त में न पड़ो, और भलाई वाले हो जाओ बेशक भलाई वाले अल्लाह के मेहबूब हैं। (सूरह, बक़रह, आयत न. 195)

बुराई खुद की वजह से

अल्लाह फ़रमाता है तर्जमा : ऐ सुनने वाले तुझे जो भलाई पहुँचे वो अल्लाह की तरफ से है और जो बुराई पहुंचे वो तेरी अपनी तरफ से है। (कंजुल ईमान , सूरह निसा, आयात न - 79)

दुनिया की हक़ीक़त (अल्लाह के नज़दीक)

अल्लाह फरमाता हैः जान लो कि दुनिया की ज़िन्दगी तो (कुछ भी) नहीं मगर खेल कूद (मौज मस्ती, मनोरंजन) और आराइश और तुम्हारा आपस में बड़ाई मारना (यानी किसी भी मामले में तकब्बुर करना) और माल और औलाद में एक दूसरे पर ज़ियादती चाहना (कम्पटीशन करना) उस मेंह की तरह जिसका उगाया सब्ज़ा किसानों को भाया फिर सूखा कि तू उसे ज़र्द देखे फिर रौंदन हो गया (यानी फ़ानी दुनिया की मिसाल फसल की हरियाली खेती की तरह है जो किसानों के लिए खुश का सबब है लेकिन कुछ ही दिन के लिए) और आख़िरत में सख़्त अज़ाब है और अल्लाह की तरफ़ से बख़्शिश और उसकी रज़ा और दुनियावी ज़िन्दगी तो नहीं मगर धोखे का माल। (सूरह हदीद, आयत नो. 20)

खास तौर पर 4 चीज़ो का नाम दुनियादारी है

1. दौलत की लालच - ये तमाम गुनाहो की बुनियाद है। यानी दौलत के वजह से नफ्सानी और शैतानी खसलतों को अपनाया जाता है।

2.नफ्सनी ख़्वाहिशात - इसके वजह से स्वार्थ, मनमर्जी और बेहयाई जैसे ख़्याल दिल मे आते है।

3.शोहरत पसंदी- यानी अल्लाह को भूल कर अपनी तारीफ़ कराना, दुसरो को दिखाना, दुसरो को हक़ीर समझना, खुद को बेहतर समझना, नामो नमूद

4. जिहालत - सुस्ती, मस्ती, खेल तमाशा, आराईस, हंसी - मज़ाक़

दुनिया की महब्बत तमाम गुनाहों की जड़ हैः-

हदीस : हुज़ूर ﷺ ने इरशाद फ़रमाया : दुनिया की महब्बत तमाम गुनाहों की जड़/असल है।(यानी दौलत, नफ़्स, शोहरत, जिहालत) (मुकाशिफतुल कुलूब, बाब 31)

दुनिया की महब्बत सब से बड़ा गुनाह हैः-

अल्लाह त'आला ने हज़रते मूसा अलैहिस्सलाम की तरफ वही की ऐ मूसा! दुनिया की महब्बत में मशगूल न होना, मेरी बारगाह में इस से बड़ा कोई गुनाह नहीं है। रिवायत है कि हज़रते मूसा अलैहिस्सलाम एक रोते हुए शख़्स के पास से गुजरे, जब आप वापस हुए तो वह शख़्स वैसे ही रो रहा था, मूसा अलैहिस्सलाम ने अल्लाह त'आला से अर्ज़ किया या अल्लाह! तेरा बन्दा तेरे डर से रो रहा है, अल्लाह त'आला ने कहा, ऐ मूसा! अगर आँसू के रास्ते उस का दिमाग़ बाहर निकल आए और उसके उठे हुए हाथ टूट जायें तब भी मैं उसे नहीं माफ करूँगा, क्योंकि यह दुनिया से मुहब्बत रखता है। (मुकाशफतुल कुलूब, बाब 31)

दुनिया ईमान को बर्बाद कर देती है

हदीस कुदसे हैः तरजुमाः दुनिया ईमान को इस तरह से खा जाती है जिस तरह से आग सूखे लकड़ी को खा जाती है।

दुनियादार की इबादत मक़बूल नहीं

हदीस : हुज़ूर सरकारे दो आलम ﷺ ने फरमायाः क़ियामत के दिन कुछ लोग ऐसे आएंगे कि उन के (नेक) आमाल वादिये तिहामा के पहाड़ों की मानिन्द होंगे, उन के लिये हुक्म होगा कि "इन को जहन्नम में ले जाओ।" सहाबा ने अर्ज की : या रसूलल्लाह ! क्या वोह लोग नमाज़ी होंगे ? फरमायाः हां! वोह लोग नमाजें भी पढ़ते होंगे और रोज़े भी रखते होंगे और रात का कुछ हिस्सा जाग कर अल्लाह की इबादत भी करते होंगे, लेकिन उन में (बुरी) बात येह होगी कि जब दुन्या की कोई चीज़ उन के सामने आती उस पर कूद पड़ते थे। (यानी दुनिया से मुहब्ब्त करते थे) (मुकाशफतुल कुलूब, बाब 31, पेज 206)

दुनिया की महब्बत का डर

फरमाने नबवी है कि जायदाद न बनाओ, तुम दुनिया से मुहब्बत करने लग जाओगे (यानी दुनियादार बन जाओगे)। (मुकाशफतुल कुलूब, बाब 38, पेज 250)

मौत के वक़्त दुनिया क्या कहती है?

अल्लाह त'आला दुनिया को बूढ़ी औरत के शक़्ल में मरने वालों के सामने पेश करता है और वो दुनिया उसे कहती है ऐ आसी तू शर्म नहीं करता था तू मेरी तलब में गुनाहों में मुबतला हो जाता था और गुनाहों से बाज़ नहीं रहता था तू ने मुझे तलब क्या मैं ने तुझे तलब नहीं किया यहां तक के तू हलाल ओ हराम में तमीज नहीं करता तेरा गुमान था के तो दुनिया से जुदा नहीं होगा पस अब मैं तुझ से और तेरे अमल से बेज़ार हूं।

(कुर्रतुल अबसार, पेज 38)

मौत के वक़्त माल क्या कहता है?

वो अपने माल को दूसरों के हाथों जाते देखता है तब इस का माल उसे कहता है ऐ गुनाहों में मुब्तला होने वाले तू ने मुझे नाजायज़ तारिक़ा से हासिल किया और फ़क़ीरो मिस्कीनो पर ख़र्च न किया आज में तेरे ग़ैर के हाथ जा रहा हूँ इस पर अल्लाह त'आला का ये इरशाद शाहिद है। (तर्जुमा) जिस दिन न माल काम आएगा न बेटे, मगर वह जो अल्लाह के हुज़ूर हाज़िर हुआ सलामत दिल लेकर (सूरह शूरा 26, आयत न. 88-89) (कुर्रतुल अबसार, पेज 39)

तुम्हें बेकार नहीं बनाया गया

अल्लाह फरमाता है (तर्जमा) : क्या यह समझते हो कि हमने तुम्हें बेकार बनाया और तुम्हें हमारी तरफ़ फिरना नहीं (सुरहः मोमिनून, आयत 115)

जानना चाहिए कि जब इंसानों को अल्लाह बेकार नही बनाया तो इंसानों को अपना तखलीक़ का असल मक़सद नहीं भूलना चाहिए और बेकार नियत, बेकार कामो, बेकार बातों में अपना कीमती वक़्त बर्बाद नहीं करना चाहिए । जो काम अल्लाह के फरमान के ख़िलाफ़ है वो तमाम काम बेकार और गुनाह है इससे हर हाल में बचना चाहिए क्योंकि ये बेकार और गुनाह वाले काम इंसान और रहमान के दरमियान हिजाब (रूकावट) है और इंसानों के असल मक़सद का हुसूल यानी , अल्लाह का कुर्ब, अल्लाह की पहचान और अल्लाह की रज़ा से महरूम रखता है।

कुरआन में अल्लाह फरमाता है : यह दुनिया की ज़िन्दगी तो नहीं मगर खेल कूद और बेशक आख़िरत का घर ज़रूर वही सच्ची ज़िन्दगी है क्या अच्छा था अगर जानते। (सुरह अंकबूत, आयत न. 64)

इंसानों के बदले फ़रिश्ते भी बसा सकता था।

अल्लाह फ़रमाता है : अगर हम चाहते तो ज़मीन में तुम्हारे बदले फरिश्ते बसाते। (सूरह जुखरूफ़, आयत न. 60)

इन्सानों को आजाद नहीं छोड़ा जाएगा

अल्लाह फ़रमाता : क्या आदमी इस घमण्ड में है कि आज़ाद छोड़ दिया जाएगा। (सूरह कियामह, आयत न 36)

सिर्फ जबानी कलमा पढ़ने वालों को अज़माया जाएगा

क्या लोग इस घमण्ड में हैं कि इतनी बात पर छोड़ दिए जाएंगे कि (जबान से) कहें हम ईमान लाए और उनकी आज़माइश न होगी। (सूरः अंकबूत, आयत न 1)

वो बातें न कहो जो करो नहीं

अल्लाह फ़रमाता है : ऐ मुसलमानों क्यों कहते हो वो जो नहीं करते। कैसी सख्त नापसन्द है अल्लाह को वो बात कि वो कहो जो न करो। (सूरह सफ़, आयत न. 2-3)

ज़बानी कलमा सिर्फ दावा है

ज़बान से कलमा पढ़ना सिर्फ दावा है और दलील पेश करने के लिए सिर्फ दावा काफी नहीं । उसकी दलील अल्लाह को एक मानना, अल्लाह के सिवा किसी पर भरोसा न करना, और अल्लाह की रज़ा के लिए हर काम को करना दिल से तमाम हक़ बातो को मानना, ईमानी खसलातों को अपनाना और हुकुकूल्ला और हुकूकुलइबाद अदा करना।

ईमान की जांच होगी

अल्लाह फ़रमाता है (तर्जमा) : अगर तुम्हें कोई तकलीफ पहुँची तो वो लोग भी वैसी ही तकलीफ पा चुके हैं और ये दिन है जिनमें हमने लोगों के लिये बारियाँ रखी है और इसलिये कि अल्लाह पहचान करा दे ईमान वालों की, और तुम में से कुछ लोगों को शहादत का मरतबा दे और अल्लाह दोस्त नहीं रखता ज़ालिमों को।(सूरह इमरान, आयत न. 140)

ईमान व अका़यद के बारे में सवाल होगा

क़ब्र में जो सवाल होना है वो र्सिफ ईमान व अका़द के ताअल्लुक से सवाल होगा बाकी आमाल व नेयमतों के तअल्लुक से सवाल क़यामत के दिन होगा

सवाल 1. : मर्रब्बुका (तर्जमा) : तुम्हारा रब कौन है ? येह खुदा के बारे में अक़ीदे के ताअल्लुक़ से सवाल होगा।

सवाल 2. : मा दीनुका (तर्जमा) : तुम्हारा दीन कौन सा है? येह भी अक़ायद के तअल्लुक से सवाल है कि तुम कौन सा दीन को मानते हो , कौन सा अमल करते थे यानी नमाज़ पढ़ते थे कि नही ये नही पूछा जाएगा।

सवाल 3. : मा कुन्ता तकूलू फी हाज़र्रजुल (तर्जमा) तू इस मर्द यानी नबी के बारे में क्या अकीदा रखता था ? येह सवाल भी अक़ीदे के तअल्लुक। इस सवाल से ज़ाहिर करना है कि कौन हुज़ूर के लिए तअ़ज़ीम व महब्बत रखता है और कौन तौहीन व बग़ावत करने वाला है और फिर राहत या तकलीफ़ का मामला क़ब्र से ही शुरु कर दिया जाएगा।

दुनियावी ज़िन्दगी के बारे में सवाल होगा

तिर्मिजी ने ब-सनदे सही यह हदीस रिवायत की है कि बन्दा उस वक्त तक कियामत के दिन नहीं हिलेगा जब तक कि उस से 5 चीजों का सवाल नहीं हो जाएगा,

1. अपनी उम्र कैसे गुजारी, 2. अपनी जवानी किन कामों में खर्च की,

3. माल कैसे हासिल किया । 4 माल कहां खर्च किया । 5. अपने इल्म पर कितना

अमल किया। (मुकाशफतुल कुलूब, बाब 68, पेज 410)

नेयमतों से आजमाए जाओगे

अल्लाह फरमाता है : तर्जमा : वही है जिसने ज़मीन में तुम्हें नायब किया और तुम में एक को दूसरे पर दर्जी बलन्दी दी कि तुम्हें आज़माए उस चीज़ में जो तुम्हें अता की बेशक तुम्हारे रब को अज़ाब करते देर नहीं लगती और बेशक वह ज़रूर बख़्शने वाला मेहरबान है (कंजुल ईमान, सुरह अनाम, आयत न. 165)

नेअमतें के बारे में सवाल होगा

हदीसे कुदसी : फरमाने इलाही है फिर तुम उस दिन निमते के बारे मैं जरूर पूछे जाओगे यानी कियामत के दिन तुम से दुनियावी नियमतों जैसे तन्दुरुस्ती कुव्वते समाअत (सुनने की तक़त), कुव्वते बीनाई (देखने की ताक़त), हुसूले रिज्क के तरीके और खाने पीने की तमाम चीज़ों के मुतअल्लिक पूछा जाएगा कि तुम ने इन चीजों को पाकर अल्लाह त'आला का शुक्र भी अदा किया था या नहीं? उस की मारिफत (पहचान) हासिल की थी या इंकार व कुफ्र के मुरतकिब हुए थे। (मुकाशफ़तुल कुलूब, बाब 46,पेज 303)

हर काम के बारे सवाल होगा

हदीस : रसूल ﷺ ने फ़रमाया पुलसिरात को जहन्नम के बीच दर्मियान रखा जाएगा। कुछ मुसलमान निजात पाने वाले होंगे कुछ जख़्मी होने और कुछ जहन्नम में गिराये जायेंगे कि उस दिन जरूर तुमसे नेयमतों के मुताअल्लिक सवाल किया जाएगा यानी पेट भर कर खाना, ठंडे पानी व शरबत, घर में आरामगाहों के बारे, तुम्हारी बेहतरीन तख़्लीक का मसरफ और नींद की राहतो के बारे में सवाल किया जाएगा। (मुक़शफतुल कुलूब, बाब 46,पेज 303)

इंसान को बदला दिया जाएगा

कुरआन में है : (तर्जुमा) " तो जो एक ज़र्रा भर भलाई करे उसे देखेगा और जो एक ज़र्रा भर बुराई करे उसे देखेगा (सूरह ज़लजला, आयत नं.7,8)

दुआ 10 वजहों से कुबूल नहीं होती

हजरत शफीक बल्खि रदीअल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि हजरत जुनैद बगदादी एक दफा बसरा के बाजारों में से गुजर रहे थे लोग आपके ईद गिर्द जमा हो गए। उन्होंने अर्ज की ऐ जुनैद बगदादी (रहमतुल्लाह अलैह) कहत साली (यानी आकाल) का जमाना है। पानी की बूंद बूंद को लोग तरस रहे हैं। कई दिनों से हम मुसलसल अल्लाह त'आला की बारगाह में दस्ते सुवाल दराज कर रहे हैं लेकिन हमारी दुआओं को शरफे कुबूल हासिल नहीं हो रहा हालांकि अल्लाह त'आला का इरशादे गिरामी है, तुम मुझसे दुआ मांगो मैं तुम्हारी दुआ कुबूल फरमाऊंगा, इसके बावजूद वोह हमारी दुआओं को कुबूल नहीं फरमा रहा, इसकी वजह क्या है? तो आपने इरशाद फरमाया ऐ अहले बसरा 10

बातों में तुम्हारे दिल मुर्दा हो चुके हैं तुम्हारी दुआएँ कैसे क़ुबूल हों।

1. तुम अल्लाह की तौहीद पर ईमान लाए हो लेकिन ईमान का हक अदा नहीं करते हो।

2. तुम कुरान पर ईमान लाए हो लेकिन उसके अहकाम पर अमल नहीं कर पाते हो।

3. तुम रसूलुल्लाह ﷺ की महब्बत का दावा करते हो लेकिन उनकी सुन्नत के मुताबिक अमल पैरा नहीं हो।

4. तुम शैतान की दुश्मनी की जबानी इजहार करते हो लेकिन आमाल में उसकी इताअत और मुवाफिकत करते हो।

5. तुमने जन्नत में दाख़िल होने का दावा किया है लेकिन उसके लिए अमल नहीं करते हो।

6. तुम दोजख़ की आग से बचने की दुआएं तो करते हो लेकिन अपने आपको उसमें फेंक रहे हो।

7. तुम जबान से येह कहते हो की मौत का आना हक़ है और अटल हक़ीक़त है लेकिन उसके लिए तैयारी नहीं करते हो।

8. तुम अपने भाइयों की ऐब जोई में मशगूल रहते हो और अपने गिरेबान में झांक कर नहीं देखते हो।

9. तुम अपने परवरदिगार की नेयमतें खाते हो और उसका शुक्र अदा नहीं करते हो।

10. तुम अपने मुर्दों को दफन करते हो लेकिन उनसे इबरत हासिल नहीं करते। (हवाला जियाउल वाईजीन, पेज 493)

ईमान की हिफाज़त

कुरआन में है : (तर्जुमा) "तो क्या वह जिसका सीना अल्लाह ने इस्लाम के लिये खोल दिया तो वह अपने रब की तरफ़ से नूर पर है," (सूरह ज़ुमर, आयत न. 22)

शाने नुज़ूल : रसूले करीम ﷺ ने जब यह आयत तिलावत फ़रमाई तो सहाबा ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह, सीने का खुलना किस तरह होता है फ़रमाया कि जब नूर दिल में दाख़िल होता है तो व खुलता है और उसमें फैलावा होता है. सहाबा ने अर्ज़ किया इसकी निशानी क्या है. फ़रमाया, 'इस फ़ानी दुनिया से कनाराकशी, आख़िरत की तरफ़ रुजू, मौत आने से पहले मौत की तैयारी"

ईमान पर खा़त्मा

अल्लाह त'आला की नेयमतों में सब से बड़ी नेमत ईमान की दौलत है। इसकी हिफ़ाज़त हर मुसलमान को महबूब फ़र्ज़ होना चाहिए। बाज़ अकाबिर औलियाए कराम से मंकूल है के जो शख़्स मगरिब के बाद की दो सुन्नतों में से पहली रकअत में सूरह फातिहा के बाद सूरह फलक और दूसरी रक-अत में सूरह फातिहा के बाद सूरअ नास हमेशा पढा करे तो इस का ईमान भी महफ़ूज़ रहेगा और ख़तमा ईमान पर होगा।

हज़रत इमाम अबू हनीफ़ा रहमतुल्लाह अलैह ने फरमाया के जो शख़्स ईमान की

दौलत मुयस्सर आने पर हमेशा ख़ुदाय-ए ताला का शुक्रिया अदा करता रहेगा, इस का ईमान भी महफ़ूज़ रहेगा और ख़ात्मा ईमान पर होगा। बल्कि खुदा-ए -त'आला के वादा के मुताबिक के : (तर्जुमा) के अगर तुम हमारी नेमतों का शुक्र अदा करो तो हम उन नेमतों में इज़ाफ़ा कर देंगे।

खुदाय-ए त'आला के इस वादे के मुताबिक ईमान में कुव्वत और ईमानी कामों में बरकत होगी इंशा अल्लाह (गंजिनाए असरार, पेज न. 16)

मतलब का नाम दोस्त, शहवत का नाम इश्क़
मतलब व शहवत से नेक आमाल हुआ फिस्क़

माज़रत चाहता हूँ इस किताब में अमल या इबादत की फजीलत के तअल्लुक से कुछ नहीं लिखा लेकिन अमल करने के लायक आपको बनाने के लिए बहुत कुछ लिखा उम्मीद करता हूं और दुआ करता हूँ कि आप अपनी अच्छी चाहत के साथ अच्छे यानी नेक बन जाए फिर नेकी का काम खुद ब खुद करने लगेंगे।

वल्लाहु आ'लम

व सलल्लाहु तआला अला ख़ैरी ख़ाल्किही मुहम्मदिन व आला आलिहि व
असहाबिही व अहले बैतिही व अजवाजिही व जुर्रियातिही
अजमईन, बी रहमतिका या अरहमर रहीमीन

अहले ग़फ़लत कहते हैं कि सब बन्दे ख़ुदा के हैं
लेकिन ख़ुदा का बन्दा होता है, ग़ुलामे मुस्तफ़ा हो कर
मुहम्मद की ग़ुलामी दो जहाँ की बादशाही है
जो यह हासिल नहीं तो दो जहाँ की रुसवाई है